मार्च 2023

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

'जिसे बंधना है उसे कोई छुड़वाने वाला नहीं है और जिसे छूटना है उसे कोई बाँधने वाला नहीं है। मगर एक ध्येय होना चाहिए; पल में बंधना और पल में छूटना, ऐसा अनिश्चितता वाला ध्येय नहीं चाहिए।'

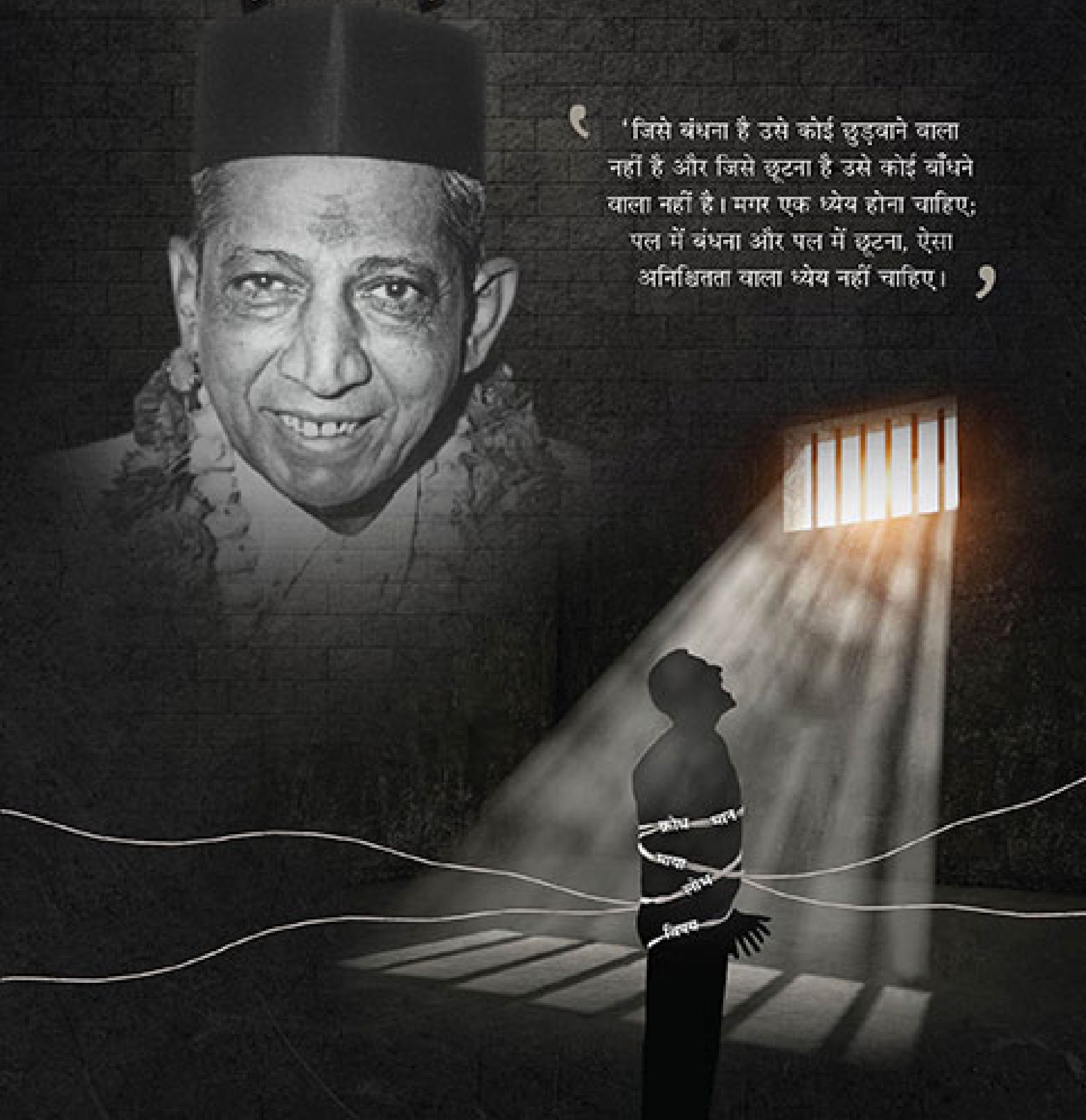

मुंबई : सत्संग – ज्ञानविधि : ता.13 से 15 जनवरी 2023

अडालज : MMHT शिविर : ता.18 से 22 जनवरी 2023

एक्टिविटी

सत्संग

मॉर्निंग वॉक

गरबा

अडालज : WMHT शिविर : ता. 25 से 29 जनवरी 2023

अडालज : SMHT शिविर : ता. 2 फरवरी 2023

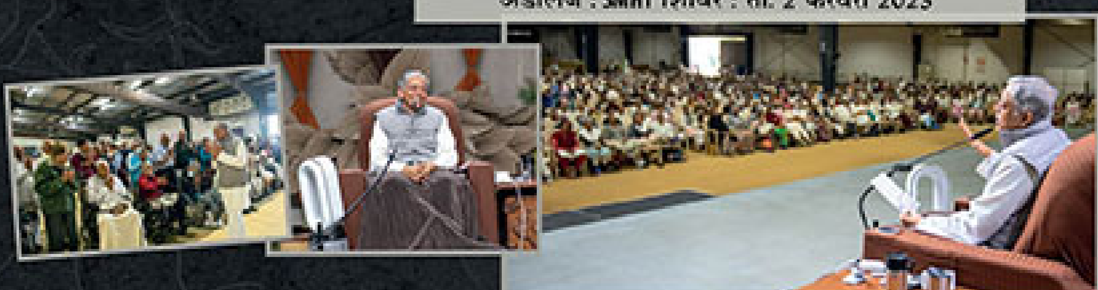

वर्ष : 18 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 209
मार्च 2023
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2023
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी आश्रय में... 'छूटना है'

संपादकीय

इस संसार के स्वरूप को कृपालुदेव ने 'काजल की काली कोठरी' कहा है, चाहे कहीं से भी दाग लगे बगैर रह ही नहीं सकता, ऐसा यह संसार है। संसार यानी राग-द्वेष का कारखाना। जैसे शक्करकंद भट्ठी में सिकते हैं, वैसे जीव संसार में चारों ओर से रात-दिन सिकते रहते हैं, वे कैसे छूटें? अनंत चौबीसी बीत गईं, ज्ञानी और तीर्थंकर मिलें फिर भी कहाँ चूक गए? कौन सी भूल रह गई? वास्तव में मूल भूल तो स्वरूप की अज्ञानता है।

परम पूज्य दादा भगवान की कृपा से कर्म खपाए बिना स्वरूप का भान सहज हो जाता है, परंतु महात्माओं के डिस्चार्ज अहंकार में जो सुख की छुपी मान्यता है, उससे उलझन होती है। इस जगत् का स्वरूप ही ऐसा है, कि सुख के बगैर खुद रह ही नहीं सकता। मैं ऐसा करूँगा तो कुछ सुख मिलेगा, ऐसी भ्रांति बरतती है, परंतु उस टेम्परारी सुख का रिपेमेन्ट दु:ख या भोगवटा है। अत: इस भ्रामक सुख की मान्यता से छूटकर मुझे आत्मा के सुख का अनुभव करना है, यह निश्चय दृढ़ करने जैसा है।

महात्माओं की तीव्र इच्छा हो जाए कि 'मुझे छूटना है' तो फिर छूटने के कारणों का सेवन होगा। परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि जो छूटने के कारणों का सेवन करेगा, उसका परिणाम छूटने का ही आएगा और जो बंधने के कारणों का सेवन करेगा उसका परिणाम बंधन ही आएगा। हम सभी छूटने के लिए सारा आयोजन करते हैं परंतु फिर भी गुप्त रूप से पता लगाए तो अंदर अहंकार को बंधने वाले कारणों में रूचि है। जैसे कि भोग लेना है, गुरुत्तम होना है। जबकि इस तरफ, अभी छूटने के कारणों वाला कैसा होता है? वह प्रकृति बोलती तो है, कि भोगना है, परंतु भीतर खुद को खटकता है कि यह गलत है, इसमें रस लेने जैसा नहीं है। अत: पहले अंदर से छूटना है, बाहर से नहीं।

प्रस्तुत अंक में, महात्मा कैसे कारणों का सेवन करें ताकि छूटा जा सके, उसके लिए परम पूज्य दादाश्री की वाणी का यहाँ पर संकलन हुआ है, जैसे कि छूटने वाला कहीं भी मोह-मान की मिठास में तन्मयाकार न हो, अहंकार को स्कोप न मिले ऐसी जगह ढूँढ निकाले, आत्मा के अलावा हर एक रिलेटिव व्यवहार में सुपरफ्लुअस रहे, जीवमात्र को दु:ख न दे, जगत् को निर्दोष देखे और अंत में तो लौकिक में लघुत्तम होना है यही छूटने की मुख्य चाबी है। आज्ञा पालन के साथ समभाव से *निकाल,* वीतरागता और ज्ञानी के प्रति प्रशस्त राग से जन्मोंजन्म की भटकन से छूट सकेंगे।

'बीत गए कई आरे के आरे, नहीं दिखे छूटने के उपाय!' काल विचित्र आ रहा है, अत: सचेत रहने जैसा है। मैं किस स्टेशन से आया हूँ? किस स्टेशन पर उतरा हूँ? किस स्टेशन पर पहुँचना है? अपनी प्रगति रूक तो नहीं रही न? उसकी सतत जागृति रखने जैसा है। इसमें ऐसा कर दूँ और वैसा कर दूँ, वह कर्तापन तो बंधन का कारण है। 'ज्ञानी पुरुष' के आश्रय में रहकर सही समझ फिट कर लें, यह जन्म छूटने के लिए है। इसलिए हमें देर नहीं करनी है, पुरुषार्थ-पराक्रम शुरू करना है, यही ध्येय होना चाहिए। ''उठा लो यह अंतिम अवसर, इस अक्रम ज्ञान को हृदय में भर!''

- जय सच्चिदानंद

ज्ञानी आश्रय में... 'छूटना है'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

(सूत्र-1)

मोक्षमार्ग की प्राप्ति के बाद प्रगति कभी भी रुके नहीं, यही हमारा हेतु होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपका ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् हमारी, महात्माओं की जो प्रगति होती है, उस प्रगति की स्पीड किस पर आधारित है? क्या करने से तेज़ी से प्रगति होगी?

दादाश्री : पाँच आज्ञाओं का पालन किया तो सबकुछ तेज़ी से और पाँच आज्ञा ही उसका कारण है। पाँच आज्ञा पालन करने से आवरण टूटते जाते हैं और शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं। जो अव्यक्त शक्तियाँ हैं, वे व्यक्त होती जाती हैं। पाँच आज्ञा के पालन से ऐश्वर्य व्यक्त होता है। तरह-तरह की कईं शक्तियाँ प्रकट होती हैं। आज्ञा पालन पर आधारित है। हमारी आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना वह तो बहुत बड़ा मुख्य गुण कहलाता है। ज्ञान से आज्ञा पालन करे तो सर्वत्र परिणाम प्राप्त होता ही है और बुद्धि से आज्ञा पालन करे तो कोई परिणाम प्राप्त नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : आप कईं बार ऐसा पूछते हैं कि प्रगति हो रही है या नहीं? तो प्रगति किस जगह पर दिखाई देती है? यानी कि प्रगति में क्या दिखाई देता है? किस तरह से पता चलता है?

दादाश्री : दखल न हो वह। किसी के साथ दखलंदाज़ी न हो। या फिर खुद अपने आप के साथ दखल न हो। इतना देख लोगे तो इसका मतलब कि प्रगति हुई है। किसी के साथ गड़बड़ हो जाए तो इसका मतलब बिगड़ गया।

करोड़ों जन्मों में भी जो चीज़ प्राप्त नहीं हो सकती, वह आपको आसानी से प्राप्त हो गई है। इसलिए अब इसका रक्षण करना। अन्य किसी चीज़ पर ध्यान मत देना। संसार तो पूरा चलता ही रहेगा। यह कहीं रुकेगा नहीं कभी भी। जैसे कि दाढ़ी बढ़ाने की इच्छा न हो फिर भी बढ़ती रहती है न? उसी प्रकार संसार चलता रहेगा। ऐसी इच्छा हो या न भी हो। और जो स्वभाव है, उस स्वभाव से ही होता रहेगा। संसार में फिर, 'हमें यह ऐसा चाहिए या वैसा चाहिए', वहाँ पर ऐसा नहीं चलेगा। अत: इतना संभाल लेना अंत तक!

(सूत्र-2)

संसार में सुख है, ऐसा कह ही कैसे सकते हैं? यह तो माना हुआ सुख है। सुख तो स्वतंत्रता होनी चाहिए, उसमें है। जब तक सांसारिक सुख फीके नहीं लगेंगे, तब तक संसार नहीं छूटेगा!

इस संसार में सुख है ही नहीं। ये विकल्पी सुखों के लिए भटकते रहते हैं, लेकिन पत्नी ज़बान चलाए तब उस सुख का पता चलता है कि यह संसार भोगने जैसा नहीं है। लेकिन यह तो तुरंत ही मूर्छित हो जाता है! मोह का इतना सारा मार खाता है, उसका भान भी नहीं रहता।

उसमें सुख था ही कब? यह तो भ्रांति से सुख लगता है। जैसे शराब पीया हुआ व्यक्ति हो, उसका एक हाथ गटर में पड़ा हो तो कहता है, हाँ अंदर ठंडक लग रही है, बहुत अच्छा है। ऐसा शराब के कारण लगता है। बाकी, उसमें सुख होता ही कहाँ है? वह सब तो सिर्फ जूठन ही है।

संसार यानी क्या? जंजाल। मछली की जाल तो अच्छी है। उसे कहीं से भी दांत से काट सकते हैं। ये जाल तो कटती नहीं है। इसमें से निकल ही नहीं सकते। अंत में जब अर्थी निकलती है तब निकल सकते हैं। यह जाल नहीं, जंजाल है! फिर, कट भी नहीं सकती, भुगतने पर ही छुटकारा है। भुगतने के बाद ही जाल से छूटते हैं। सारे हिसाब चुकाने के बाद फिर जाल से छूटते हैं! लेकिन फिर नई जाल तो तैयार कर देते हैं हम, अगले जन्म की जाल वापस तैयार कर ही देते हैं! पूरा संसार जाल स्वरूप है। नायलोन की जाल से छूटते हैं तो सूती धागे की जाल में बंध जाते हैं। वह तो, कोई मुक्त हुए मिल जाए, वे ही हमें मुक्त करवा देते हैं।

इस संसार के झंझट में विचारशील को पुसाता नहीं है। जो विचारशील नहीं है, उसे तो यह झंझट है उसका भी पता नहीं चलता, वह मोटा बहीखाता कहलाता है। जैसे कि कोई कान से बहरा आदमी हो, उसके सामने उसकी चाहे जितनी गुप्त बातें करें, उसमें क्या परेशानी है? ऐसा अंदर भी बहरा होता है सब, इसलिए उसे यह जंजाल पुसाता है। बाकी जगत् में मज़े ढूँढने जाता है तो इसमें तो भाई कोई मज़ा होता होगा? चाहे कितना भी वैभव हो लेकिन बंधन लगता है।

(सूत्र-3)

यह बंधन कैसे हुआ? बंधन से मुक्त कैसे हो सकते हैं? पहले तो, कितनों को यह बंधन है, ऐसा भी भान नहीं हुआ है। जब परवशता का अनुभव होता है तब बंधन का अनुभव होता है। क्रोध-मान-माया-लोभ के बंधन, घर के बंधन, बाकी सभी बंधन। बंधन का अनुभव होने के बाद मुक्ति का मार्ग मिलता है!

बंधन का मतलब जानते हो? बंधन, वह क्या है? अभी बंधे हुए हो, उसका अनुभव है आपको या नहीं है?

प्रश्नकर्ता : क्लियर (स्पष्ट) अनुभव नहीं है।

दादाश्री : घर पर देर से पहुँचते हो, तो घर में डाँटते हैं क्या? (डाँटते हैं) तो आपको अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : उसे कहते हैं बंधन-परवशता। यानी अंदर डर लगता है न, देर हो जाए तो? और कुछ गलत हो गया हो, तो सरकार का डर लगता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ! लगता है।

दादाश्री : वह सारी परवशता हैं और परवशता, वही बंधन है। यह शरीर या सिर दर्द कर रहा हो तो हम बाहर निकलकर बैठ सकते हैं क्या? घर के अंदर ही बैठे रहना पड़ता है न? दु:ख भोगना पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : प्रकृति से परवश तो है न?

दादाश्री : हाँ! प्रकृति से तो परवश है लेकिन ये घर के सभी लोग से, सभी से परवश है न? वे कहेंगे, 'सुबह के सात बज गए फिर

भी अभी तक उठे नहीं है?' आप थके हुए हो। लेकिन वे कहे, 'उठे नहीं' तो फिर आपको उठना ही पड़ेगा। वर्ना कहे, 'अरे चाय बन गई है, उठो' तो यदि तबियत ठीक न हो तब भी उठना ही पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : सभी के अनुकूल रहना ही पड़ता है न!

दादाश्री : हाँ, लेकिन क्या हो सकता है! परिवार में आ गए हैं, पारस्परिक संबंध में, तो परवश रहना ही पड़ेगा न! यदि निरालंब संबंध स्थापित हो जाए तो जगत् में किसी की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

सबसे पहले, बंधन में हूँ, ऐसा ज्ञान होना चाहिए। दिनभर परवशता लगती है। स्वतंत्र नहीं है न! जब परवशता का अनुभव होता है तब बंधन का अनुभव होता है। क्रोध-मान-माया-लोभ के बंधन, घर के बंधन, बाकी कितने सारे बंधन! बंधन का अनुभव होने के बाद मुक्ति का मार्ग मिलता है! आपको अनुभव हुआ है न, कि कितने तरह के बंधन हैं, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : हाँ! परंतु पहले बंधन नहीं लगता था। यह तो, आपने दिखाया तब बंधन समझ में आया।

दादाश्री : यहाँ आपको सत्संग में दो घंटे बैठाकर रखे, यहाँ से जाने न दे और भूख लगी हो, तो आप क्या करोगे? उस भूख का कितना ज़्यादा बंधन है! प्यास का बंधन, नींद का बंधन, फिर यह पुलिस वाला पकड़ ले, वह भी बंधन, पत्नी का बंधन, बच्चों का बंधन, कितने प्रकार के बंधन हैं!

एक क्षण के लिए भी जब इस बंधन का अनुभव नहीं भूले, तब वह भगवान महावीर का विज्ञान समझने के लायक हुआ, ऐसा कहा जाएगा! निरंतर बंधन ही लगता रहे। उसे यह कुछ भी अच्छा न लगे, पैसे हों तब भी अच्छा न लगे, पत्नी हो तब भी अच्छा न लगे, गाड़ी हो तब भी अच्छा न लगे। निरंतर बंधन लगता रहे। जेल में डालने से भी बदतर (खराब) दशा है यह! यह तो सबसे बड़ी जेल है! फिर भी प्रमाद की वजह से चाय-पानी पीता है, उससे नशा आता है और नशा चढ़ता है तो फिर मस्ती में ज़रा पान वगैरह खाता है, सुपारी काटकर खाता है, न हो तो इलायची मुँह में डालता है और मस्ती ही मस्ती में, मूर्च्छा में घूमता रहता है।

यह संसार यानी परवशता का संग्रहालय! जहाँ खुद का परवशपन ही समझ में नहीं आता, वहाँ स्वतंत्रपना कहाँ से समझ में आएगा? यानी स्वतंत्र होने की ज़रूरत है न? यों परवश कब तक रहना है?

(सूत्र-4)

भगवान का नियम क्या है? जिसे छूटना है उसे भगवान कभी भी बाँधते नहीं हैं और जिसे बंधना है उसे कभी भी छोड़ते नहीं हैं। छूटने की सही इच्छा यानी क्या कि छूटने की इच्छा को वह भूले नहीं, तो वह छूट सकता है।

अब, जिसकी बंधने की इच्छा है, उसे मुक्ति नहीं मिल सकती। जिसकी छूटने की इच्छा है, उसे बंधन नहीं हो सकता। छूटने की इच्छा है क्या किसी की?

प्रश्नकर्ता : छूटने के लिए तो हम निकले हैं। स्वतंत्रता तो सभी को प्यारी है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन छूटने की सही

इच्छा ही कभी नहीं की न! बंधने की ही इच्छा पसंद है।

प्रश्नकर्ता : मुझे छूटना है तो कैसे छूट सकते हैं?

दादाश्री : ऐसा नहीं, छूटने की इच्छा करनी चाहिए न।

प्रश्नकर्ता : ऐसी इच्छा हो गई है तभी प्रश्न पूछा है न।

दादाश्री : नहीं, ऐसी इच्छा तो सभी को होती है न। हर एक को छूटने की इच्छा होती ही है, यह बंधन अच्छा नहीं लगता, सभी को उकताहट होती ही है। परंतु छूटने की सच्ची इच्छा यानी क्या कि छूटने की इच्छा को वह भूले नहीं, तो वह छूट सकता है। परंतु थोड़ी देर के लिए भूल जाते हो या नहीं? रात में सो जाते हो या नहीं?

प्रश्नकर्ता : नींद तो आती ही है न!

दादाश्री : हाँ, फिर भी जो छूटने की इच्छा को नहीं भूले, वह छूट सकता है। यह तो रात में ओढ़कर सो गए, तो हो गया। और दिन में यदि किसी ने कह दिया हो कि, 'आप में अक्ल नहीं है', तो छूटने की इच्छा तो फिर भूल जाते हैं बल्कि बंधने की इच्छा करने लगते हैं। आप से किसी ने कहा कि, 'आपने हमारा यह बिगाड़ दिया' तो उस समय छूटने की इच्छा भूल जाते हो न? और उस समय बंधने की इच्छा करने लगते हो न?

प्रश्नकर्ता : उस छूटने की इच्छा को भूल ही न पाए, उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसके लिए तो छूटने की इच्छा कैसी होनी चाहिए, वह जानना चाहिए। बाकी, यों बात करने से कुछ नहीं मिलता। उसके तरीके के बिना कुछ नहीं मिलेगा। यानी तरीका आना चाहिए। जब तक यथार्थ विज्ञान में नहीं आ जाता, तब तक छूट नहीं सकते!

(सूत्र-5)

छूटने के कारणों का सेवन करें, उसे छूटने के सारे संयोग मिल जाते हैं। वहाँ भगवान उसे 'हेल्प' करते ही रहते हैं और जो बंधने के कारणों का सेवन करता है, उसे भी भगवान 'हेल्प' करते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हमें किस तरह से समझ में आएगा कि बंधना है या छूटना है?

दादाश्री : बंधने के कारणों का सेवन करते हैं या छूटने के कारणों का सेवन करते हैं, उस पर से समझ में आएगा। छूटने के कारणों का सेवन करे, उसे छूटने के संयोग मिल जाते हैं। वहाँ उसे भगवान 'हेल्प' ही करते रहते हैं और जो बंधने के कारणों का सेवन करता है, उसे भी भगवान हेल्प करते रहते हैं। भगवान का तो 'हेल्प' करने का ही काम है न!

जिसे बंधना है उसे कोई छुडवाने वाला नहीं है और जिसे छूटना है उसे कोई बाँधने वाला नहीं है। मगर एक ध्येय होना चाहिए। पल में बंधना और पल में छूटना, ऐसी अनिश्चितता ध्येय के संबंध में नहीं होनी चाहिए। ध्येय यानी निश्चय कि अब इसमें जो भी होना है वह हो जाए। ये सभी गाते रहते हैं न, जो होना है वह हो जाए, ऐसा गाते हैं। क्या गाते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं छोड़ूँगा दादाजी, आपको नहीं छोड़ूँगा, जो होना हो सो हो जाए दादाजी आपको नहीं छोड़ूँगा।

दादाश्री : हाँ, फिर अपने ध्येय को नहीं छोड़ते। अपने ध्येय अनुसार हो सके, ऐसा हो तो फिर वे नहीं छोड़ते।

प्रश्नकर्ता : तो इस जन्म में जिसे ज्ञानी पुरुष मिले हैं उसने पिछले जन्म में कभी मोक्ष प्राप्ति का ध्येय रखा होगा?

दादाश्री : हाँ, तभी मिलते हैं न!

प्रश्नकर्ता : यानी जब यहाँ जन्म लेता है तब उस ध्येय की प्राप्ति होती ही है न?

दादाश्री : सिर्फ वह ध्येय अनिश्चित होता है, पक्का नहीं।

प्रश्नकर्ता : पक्का नहीं यानी इच्छा होती है, ध्येय नहीं होता।

दादाश्री : हाँ, इच्छा तो होती है। यह ध्येय भी है पर अनिश्चित ध्येय है। खुद दूसरी पटरी पर गाड़ी चढ़ा दे तो उस पटरी पर चलने लगे, ऐसा अनिश्चित नहीं होना चाहिए। ध्येय उसे कहते हैं कि वह पटरी बदले ही नहीं। चाहे कोई अन्य पटरी पर चढ़ाना चाहे मगर वह चढ़े नहीं।

प्रश्नकर्ता : उसका दिशा निर्देष यंत्र क्या होता है? 'उल्टी पटरी, सीधी पटरी' का प्रमाण क्या है?

दादाश्री : आपको पसंदीदा बोले और आप पर असर हो जाए तो समझना कि यह 'पोइन्टमेन' आया! पसंदीदा बोले तो फिर मन भ्रमित हो जाता है। यानी 'पोइन्टमेन' है, वह गाड़ी दूसरी पटरी पर चढ़ा देता है, उतनी ही 'स्पीड' से! फिर भी दूसरी पटरी पर चला जाता है, उसका पता भी नहीं चलता कि मैं दूसरी पटरी पर हूँ। फिर अगर कोई कहेगा कि, ''अरे, यह 'रोंग वे' पर कहाँ आ गए?'' तब कहता है, ''हमारा 'रोंग वे' नहीं हो सकता कभी भी!''

प्रश्नकर्ता : इसलिए निरंतर ज्ञानी का आश्रय रखने को कहा है न?

दादाश्री : इसीलिए ही कहा है न, नहीं तो बात-बात में 'पोइन्टमेन' मिल जाएँगे और गाड़ी की पटरी बदल देंगे, एकदम से! अपनी 'मेन लाइन' बदल नहीं जाए, उसका ध्यान रखना। ये सारी पिछली आदते हैं न? सिर्फ इतना ही है कि उन आदतों को नहीं निकाला है। आपकी समझ में आना चाहिए कि ये आदतें पहले की हैं।

एक तो अहंकार से मिठास आती है और उल्टी पटरी पर चढ़ने से मिठास आती है और 'इमोशनल' होता जाता है। जबकि अगर 'मेन लाइन' पर होगा तो निराकुलता रहेगी ही। जबकि उसमें तो निराकुलता चली जाती है, चेहरा व्याकुल दिखता है। ये सारे विचार, वगैरह सब व्याकुल लगते हैं। उल्टी पटरी पर चलता है, इसलिए खुद का सुख खो देता है।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, इतने सुंदर सहज रूप से संयोग मिलते हों फिर भी वह मोक्ष प्राप्ति का ध्येय पिछले जन्म में या अन्य किसी जन्म में अनिश्चित ध्येय होने के कारण ऐसा होता है?

दादाश्री : इसीलिए ही न, वर्ना नहीं होता। आपको तो लोग बहुत पुण्यशाली मानते हैं। पर अब पुण्यशाली को भी पाप घेर लें तो उसका क्या कर सकते हैं? इसलिए तो उन पर विचारणा करके अंदर जो मोह के परमाणु हैं न, उन्हें निकाल देना पड़ेगा। मोक्षमार्ग में नुकसान पहुँचाने वाले जितने भी परमाणु हों, उन सभी मोह के परमाणुओं को निकाल देना पड़ेगा। वे अंदर भर लाया है। क्योंकि कुसंग का प्रभाव ज्यादा होने से कुसंग

अंदर प्रवेश कर लेता है इसलिए फिर उसे निकाल देना पड़ता है। निकाल देना यानी क्या? उनसे निवृत हो जाना है। भले ही वे पड़े रहें, पर उन पर ध्यान नहीं देना है। उदय आने पर अपने आप वे फल देकर चले जाते हैं।

यानी जिसने छूटने का निश्चय ही कर लिया है, उसे कोई बाँधने वाला नहीं है। मोक्ष में जाने का ही निश्चय किया है कि अब मुझे मोक्ष के अलावा और कोई चीज़ नहीं चाहिए इसलिए उसका ऐसा बंध गया। यह भी चाहिए और वह भी चाहिए तो वह वैसा बाँधता है।

प्रश्नकर्ता : इस हिसाब से तो मेरा अभी का जो ध्येय है वह भी अभी अनिश्चित ही कहा जाएगा।

दादाश्री : वे सारे, अनिश्चत ही है न! जब तक मोह के परमाणु खत्म नहीं करते तब तक अनिश्चित ही है न! अभी भी मोह पसंद है।

(सूत्र–6)

बहुत दुःख सहन किए हैं। यदि उनकी *नोंध* करें न, तब भी मोह छूट जाएगा! फिर भी मोह कम नहीं होता और मार खिलाता ही रहता है!

पूरा संसार दगा है। इसमें कोई अपना सगा नहीं है। ऐसे इस संसार की विकरालता यदि समझ में आ जाए तो मोक्ष की इच्छा तीव्र हो जाए। संसार की विकरालता, वह तो मोक्ष के लिए काउन्टर वेट है।

यह एक मनुष्य जन्म महामुश्किल से मिला है। वहाँ तो सीधा रह न! और मोक्ष का कुछ साधन ढूँढ निकाल, और काम निकाल ले। बेटा परेशान करे तब बुढ़िया कहेगी, 'भाड़ में जाए यह संसार, कड़वे ज़हर जैसा है'। तब हम कहें कि, 'माँ जी, क्या यह संसार पहले कड़वा नहीं था?' वह तो हमेशा से कड़वा ही है। लेकिन मोह के कारण, मूर्च्छा के कारण मीठा लगता था। बेटा परेशान करे, उतने समय तक मूर्च्छा चली जाती है और संसार कड़वा लगता है। लेकिन फिर वापस मूर्च्छा आ जाती है और सबकुछ भूल जाता है! 'ज्ञानी' को तो एट ए ग्लान्स सब हाज़िर रहता है। उन्हें तो यह जगत् जैसा है वैसा निरंतर दिखता ही रहता है। तब फिर मोह रहेगा ही कहाँ से? यह तो उसे भान नहीं है इसलिए मार खाता है।

ऐसे संसार की विकरालता समझ लेनी है। यह तो ऐसा ही समझता है कि इसमें से मैं कुछ सुख ले आता हूँ। ऐसा करूँगा तो उससे कुछ सुख मिलेगा। लेकिन वहाँ भी मार खाता है। जहाँ-जहाँ मोह होता है, वहाँ-वहाँ दुःख होता है। बहुत दुःख सहन किए हैं। यदि उनकी *नोंध* (मन में टांकना) करें न, तो भी मोह छूट जाएगा! फिर भी मोह कम नहीं होता और मार खिलाता रहता है! उस मोह की वजह से ही 'भीतर' जो घाव हुए हैं वे भर जाते हैं। वर्ना वैराग्य ही आ जाता न!

(सूत्र–7)

संसार में आप कुछ भोगो और उसमें आपको रस आता है तो उससे बंधन होता है और यदि उसे भोगते समय बिल्कुल भी रस नहीं हो, तब बंधन नहीं होता। वही यथार्थ पुरुषार्थ है।

खाओ-पीओ, सबकुछ करो। मैंने खाने के लिए मना नहीं किया है, अपनी पसंद के कपड़े पहनो, लेकिन नीरस हो जाओ। यदि इन सभी में नीरस हो जाओगे तो आत्मा का अनुभव हो

जाएगा। इन सभी रस की वजह से आत्मा का अनुभव नहीं होता है। बाकी सभी जगह रस होगा तो यहाँ आत्मा की बाबत में नीरस हो गया, इसलिए अनुभव नहीं होता।

किसी चीज़ से बंध ही नहीं सकते वैसे आप 'खुद' हो। अपने 'खुद' को पहचानो, उसका ज्ञान प्राप्त करो, वैसा आत्मा है!

अब, जिसे आत्मसुख है वह ये बाहर के सुख नहीं ढूँढता कि फलाना खाऊँगा तो सुख आएगा। फलाना खाऊँगा तो सुख आएगा या घुमने जाऊँगा तो सुख आएगा। सो जाऊँगा तो सुख आएगा। ये तो सब मान्यताएँ हैं। अनंत जन्मों से यही का यही किया है न! सो ही गया है न, और क्या? जागा ही नहीं न!

अभी भी बाहर के सुख ढूँढते हो, तब तक यह जो आत्मा प्राप्त हुआ है, उसका सुख नहीं आएगा। वर्ना, हमने जो आत्मा दिया है, वह तो निरंतर सुख दे ऐसा है, लेकिन बाहर के सुख नहीं ढूँढोगे तो। बाहर के सुख ढूँढते हैं, इसलिए ये सब सुख नहीं आते। जो भिखारी होता है वह बाहर ढूँढता है, जिसे अंदर नहीं मिलता हो वह बाहर ढूँढता है। अंदर के दरवाज़े बंद होते हैं, अंदर की आमदनी बंध हो तो फिर बाहर की आमदनी करनी पड़ती है।

भीतर अभी भी कहीं रस पड़ा है, उसे ढूँढेंगे तो पता चलेगा। वर्ना, आत्मा का अनुभव हो ही जाना चाहिए। 'यहाँ' रस होगा तो वहाँ रस नहीं होगा। 'यहाँ' आत्मा में संपूर्ण प्रकार से रस होगा तब भी ये इन्द्रियाँ अच्छी तरह से खाती-पीती है, सभी कुछ करें ऐसी है। आपको रस नहीं होगा तब भी स्वाद आएगा। रस रहने से तो बल्कि स्वाद बिगड़ता है। क्योंकि सहजता टूटती है न! रस होने से इमोशनल होता है। उससे बल्कि उसका स्वाद बिगड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब पहले जैसा लगाव नहीं रहता है।

दादाश्री : अब, वास्तव में लगाव नहीं रहा है, लेकिन थोड़ा-थोड़ा लगाव है, वह रस है। और इसीलिए आत्मानुभव बाकी है। अभी पान में रस है न? जब तक कहीं थोड़ा भी रस है, उतना अनुभव कच्चा कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आत्मा की बाबत में रस ज़्यादा रहता है।

दादाश्री : आपको ऐसा लगता है कि अब किसी में रस नहीं रहा? वह तो, जब कोई अपमान करेगा तब पता चलेगा कि रस रहा है या नहीं!

(सूत्र-8)

यदि छूटना हो, तो वह जो कुछ भी कड़वा-मीठा दें (गाली वगैरह), उन्हें जमा कर लेना।

मूल वस्तु प्राप्त करने के बाद अब अहंकार का रस खींच लेना है। अहंकार का स्वभाव है कि नाटकीय तौर पर वह सारा काम कर देता है। अहंकार तो काम का है, वर्ना संसार व्यवहार कैसे चलेगा? अहंकार को खत्म नहीं करना है, उसे नीरस करना है। सभी को अपमान पसंद नहीं आता पर हम कहते हैं कि वह तो बहुत हेल्पिंग है। मान-अपमान तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। अपमान करता है, वह तो आपका कड़वा रस खींचने आया है। 'आप बेअक्ल हैं', ऐसा कहा, मतलब, सामने वाले ने वह रस खींच लिया। जितना रस खींच लिया उतना अहंकार टूटा और वह भी बिना मेहनत के दूसरे ने खींच दिया।

अहंकार तो रस वाला है। जब अनजाने में कोई निकाले तब जलन होती है इसलिए जान-बूझकर सहज रूप से अहंकार को कटने देना। सामने वाला सहज रूप से रस खींच लेता हो, उससे बढ़कर और क्या हो सकता है? सामने वाले ने कितनी बड़ी हेल्प की कहा जाएगा!

'जब अपमान का भय नहीं रहेगा तब कोई अपमान नहीं करेगा', ऐसा नियम ही है। जब तक भय है तब तक व्यापार है। भय चला गया कि व्यापार बंद। अपने बहीखाते में मान और अपमान का खाता रखो। जो कोई मान-अपमान दें उसे बहीखाते में जमा करते जाओ, उधार मत करना। चाहे कितना भी बड़ा या छोटा कड़वा डोस कोई दें तो उसे बहीखाते में जमा कर लेना। तय करो कि महीने भर में सौ अपमान जमा कर लेने हैं। जितने ज़्यादा आएँ, उतना अधिक मुनाफा। यदि सौ के बजाय सत्तर मिलें तो तीस का घाटा। फिर अगले महीने में एक सौ तीस जमा करना। जिसके खाते में तीन सौ अपमान जमा हो गए, उसे फिर अपमान का भय नहीं रहता। वह फिर पार उतर जाता है। पहली तारीख से बहीखाता शुरू कर ही देना। इतना हो पाएगा या नहीं?

(सूत्र-9)

प्रत्येक अवस्था अच्छी या बुरी, छूटने के लिए ही आती है। वहाँ यदि हम उपयोगपूर्वक रहेंगे तो बिल्कुल साफ हो जाएगा!

इस संसार में कैसा है? कि दुःख पड़े उसे भी भूल जाता है, सुख आए उसे भी भूल जाता है, बचपन में बैर बाँधा उसे भी भूल जाता है। फिर साथ में बैठकर चाय पीते हैं वापस, सबकुछ भूल जाते हैं। परंतु जिस समय जो अवस्था उत्पन्न हुई, उस अवस्था में एकाकार होकर हस्ताक्षर कर देता है। यह हस्ताक्षर किया हुआ फिर मिटता नहीं है। इसलिए ये हस्ताक्षर होते हैं, उनका हर्ज है। लोग बात-बात में हस्ताक्षर कर देते हैं। यों ही कोई झिड़काए, उसमें भी हस्ताक्षर हो जाते हैं। अरे, अपनी बेटी को कोई उठाकर ले जाए तो भी उस समय हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए। लोग अवस्था में ही सारा चित्रण कर देते हैं, मार डालने का भी चित्रण कर देते हैं! पूरा जगत् अवस्था में रहा करता है, अवस्था से बाहर नहीं निकल सकता। अवस्था में रहने वाले को तो रात-दिन अस्वस्थता रहती है।

हर एक अवस्था छूटने के लिए ही आती है। ये जितनी भी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, खराब या अच्छी, शाता वेदनीय या अशाता वेदनीय, परंतु वे छूटने के लिए आती हैं। अवस्थाएँ क्या कहती हैं कि, 'आप मुक्त हो जाओ'। वहाँ यदि हम उपयोगपूर्वक रहेंगे, तो बिल्कुल शुद्ध होकर मुक्त हो जाएँगे। वर्ना दाग़ वाला फिर से आएगा, तो धोना तो हमें ही पड़ेगा न!

अगर इस संसार में वास्तविक रूप से देखा जाए तो, भगवान खुद की अवस्थाएँ लेकर घूम रहे हैं। कोई पंगु, कोई लूला, कोई दुःखी, कोई टी.बी. वाला, इस तरह भगवान खुद, इन सभी अवस्थाओं में घूम रहे हैं। हम अवस्थाओं को देखते हैं लेकिन यदि हमें भगवान को देखना आ जाए तो काम हो जाएगा! मूल स्वरूप तत्वस्वरूप है, वह अविनाशी है। अवस्था विनाशी है।

मोक्ष में जाने का जो प्रमाणपत्र है, उसमें किसी भी क्रिया को नहीं देखा जाता। मात्र वीतरागता को ही देखा जाता है। दखल किसे कहते हैं? अगर कोई भी अवस्था आए और उसमें चित्त कुछ देर के लिए चिपक जाए, तो वह दखल है। यात्रा में चाहे कैसी भी अवस्था आए तो भी हम चिपकते नहीं हैं। हम अवस्था को खड़ा नहीं

रहने देते। तीन मिनट के लिए खड़ा रखेंगे तो सभी की लाइन लग जाएगी। समझ में आ रहा है न यह? अवस्थाओं में तन्मयाकार रहे, उसे संसार कहते हैं, वही संसारबीज डालता है और स्वरूप में तन्मयाकार रहे उसे मोक्ष कहते हैं।

(सूत्र-10)

यदि तुझे मोक्ष में जाना है तो फिर झाड़ियों में फँसे मत रहना। धोती फँस जाए तो भले ही वह फट जाए पर खिंचकर चलने लगना। अरे भले ही निकल जाए तो भी, उसे छोड़कर चलने लगना!

यदि मोक्ष में जाना है तो 'एवरीव्हेर एडजस्ट' होना ही पड़ेगा। और 'किसी के साथ टकराव में मत आना और टकराव टालना'। हमारे इस वाक्य का यदि आराधन करोगे तो अंत में मोक्ष तक पहुँचोगे। तुम्हारी भक्ति और हमारा वचनबल सारा काम कर देगा। सामने वाले की तैयारी होनी चाहिए। यदि कोई हमारे एक ही वाक्य का पालन करे तो वह मोक्ष में जाएगा ही। अरे, हमारा एक ही शब्द, ज्यों का त्यों, पूरा का पूरा गले उतार ले, तो भी मोक्ष हाथ में आ जाए ऐसा है। लेकिन उसे 'ज्यों का त्यों' गले उतार लेना। हमारे एक शब्द का यदि एक दिन भी पालन करे तो ग़ज़ब की शक्ति उत्पन्न होती है! भीतर इतनी सारी शक्तियाँ हैं कि कोई कैसे भी टकराव करने आए, फिर भी उसे टाल सकें। जो जान-बूझकर खाई में गिरने की तैयारी में हैं, क्या उनके साथ टकराने के लिए बैठे रहना है? वह तो कभी भी मोक्ष में नहीं जाएगा, ऊपर से आपको भी अपने साथ बिठाए रखेगा। यह कैसे पुसाएगा? यदि आपको मोक्ष में ही जाना हो तो ऐसों के सामने ज़्यादा अक़्लमंदी मत करना। सभी ओर से, चारों दिशाओं से सँभालना, वर्ना यदि आपको इस जंजाल से छूटना होगा तो भी जगत् छूटने नहीं देगा। इसलिए घर्षण किए बगैर 'स्मूदली' (सरलता से) बाहर निकल जाना है। अरे, हम तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि तेरी धोती झाड़ी में फँस जाए और तेरी मोक्ष की गाड़ी छूटने वाली हो तो भाई धोती छुड़वाने के लिए बैठे मत रहना! धोती छोड़कर भाग निकलना। अरे, एक क्षण भी किसी अवस्था में बैठे रहने जैसा नहीं है। तब फिर बाकी सब की तो बात ही क्या करनी? जहाँ तुम चिपक गए, वहाँ तुम अपने स्वरूप को भूल गए।

(सूत्र-11)

एक ही *लक्ष* रखना कि, 'आत्मा जानना है'। 'यह करना है और वह करना है', इसके आग्रह में मत पड़ना। जिस समय जो हुआ, वही सही है।

इस जगत् में ऐसा कोई सत्य नहीं है कि जिसका आग्रह करने जैसा हो! जिसका आग्रह किया, वह सत्य है ही नहीं! 'वीतराग भगवान', ऐसा दबाव नहीं डालते कि उनका खुद का मार्ग सही है। 'क्यों?' दबाव डालने से तो उनकी वीतरागता टूट जाएगी। निराग्रही का मोक्ष है, आग्रही का नहीं। वीतराग भगवान कभी भी आग्रह नहीं करते। आग्रही पक्ष में पड़ जाता है और पक्षपाती का कभी भी मोक्ष नहीं है! जहाँ आग्रह है, वहाँ संसार है। जहाँ आग्रह है वहाँ पकड़ है, और जहाँ पकड़ है वहाँ पर व्यथा!

पकड़ से ही सब बंधे हुए हैं। वो पकड़ ही उन्हें बाँधती है। ये सही और ये गलत, उसमें ही पड़े रहते हैं। किसी भी बात दो मिनिट से अधिक खिंचे तो वहाँ से भगवान चले जाते हैं! बात उलझी कि भगवान चले जाते हैं। बातचीत करने में हर्ज नहीं है, परंतु उसे पकड़ना नहीं चाहिए। पकड़ ली तो फिर बोझा बढ़ जाता है।

किसी भी चीज़ की पकड़ नहीं पकड़ना चाहिए। जिस पानी से मूँग पके उस पानी से मूँग पकाना। यदि पकाना ही है तो गटर का पानी ही सही, लेकिन जल्दी पकाओ। मतलब, जिस पानी से भी पके उस पानी से पकाकर काम को आगे बढ़ाना है। किसी के प्रति हिंसक नहीं होना चाहिए। उसमें किसी को भी नुकसानदायक भाव नहीं होने चाहिए, (अपना) काम निकाल लेना है। पकड़ पकड़ने से हमारे आगे बढ़ने के मार्ग में रुकावट आती है। प्रगति में रुकावट आती है।

(सूत्र-12)

इस कुदरत का कैसा है? किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी उसका *धार्युं* नहीं करने देती। लेकिन जिसके मन से, वाणी से या वर्तन से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं होता, उसे कुदरत *धार्युं* करने की सारी सत्ता दे देती है।

प्रश्नकर्ता : सामने वाले से अपना *धार्युं* (मनमानी) करवाना, क्या वह *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन) में आएगा?

दादाश्री : और फिर क्या? *आड़ाई* नहीं तो और क्या है? और वह रूठकर भी, अंत में *त्रागा* (अपनी बात मनवाने के लिए किए जाने वाला नाटक) करके भी अपना *धार्युं* करवाता है। *त्रागा* आपने नहीं देखा है? *त्रागा* यानी खुद ऐसा कुछ करना ताकि सामने वाला घबराकर फिर उसकी बात को 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) कर ले। अपना *धार्युं* करवाने के लिए कुछ भी करता है। सिर कूटता है, ऐसे करता है, उछलकूद करता है, रोता है, ज़ोर-ज़ोर से रोता है। हमें हर तरह से डरा दे, वह *त्रागा* कहलाता है। खुद का *धार्युं* नहीं होता तब त्रागा करता है। *धार्युं* करवाने के लिए ऐसा करे, उसे त्रागा कहते हैं। खुद का *धार्युं* करवाने के लिए, दूसरे सभी लोगों को डराने के लिए नाटक करना, वह *त्रागा* कहलाता है। अरे, तूफान, तूफान!

प्रश्नकर्ता : यह *धार्युं* होने में तो अभी तक की जो गलतियाँ हुई हैं न, अगले जन्म के बंधन के लिए, क्योंकि *धार्युं* करना था। *धार्युं* के मुताबिक तो नहीं होता है, लेकिन अगला जन्म ज़रूर बंध जाता है उससे। ऐसा ही है न?

दादाश्री : ऐसा ही है, अगले जन्म के बीज डल जाते हैं। जैसे ही व्यवस्थित को गलत है, ऐसा कहा कि बीज डल जाते हैं। और यह व्यवस्थित तो भगवान जैसी शक्ति कहलाती है (फिर भी जड़शक्ति हैं)। उसे गलत है ऐसा नहीं कहना। उस पर शंका की तब भी बीज डल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : कर्ताभाव की जो पूरी दृष्टि बन चुकी है, वही पूरा अगला जन्म बंधवाती है?

दादाश्री : हाँ, वही और कौन? जो अहंकार है न, वही।

प्रश्नकर्ता : और व्यवस्थित की इस आज्ञा से वह दृष्टि छूट जाती है!

दादाश्री : छूट जाती है और व्यवस्थित ही है। आखिर में व्यवस्थित के अधीन ही करना पड़ता है।

(सूत्र-13)

जब तक कर्तापद है, तब तक अध्यात्म की जागृति ही नहीं मानी जाती है, तब तक वह अध्यात्म में सो रहा है। कर्तापद हो तो स्वच्छंद कहलाता है। 'कर्ता खुद है', ऐसा मानने से संसार कायम रहा है और 'कर्ता कौन है', वह जानेंगे तो छूट जाएगा। 'भगवान' कर्ता नहीं हैं और 'लोग' भी कर्ता नहीं हैं। कर्ता तो

अन्य शक्ति है, जो काम कर रही है। हम उसे 'व्यवस्थित शक्ति' कहते हैं।

सभी योनियों में भटक-भटककर आया है, लेकिन कहीं भी सच्चा सुख नहीं मिला, वहाँ अहंकार की गर्जनाएँ और विलाप ही किए है। यदि अहंकार से दखल नहीं दे तो इसे जैसा है वैसा जान सकेगा। अब, अहंकार क्यों करता है, कि वह खुद नहीं करता और कहता क्या है, 'मैंने ऐसा किया और वैसा किया'। परंतु ऐसा तो नाटकीय रूप से बोलना है। भगवान कर्ता नहीं हैं और आप भी कर्ता नहीं हो। जो करता है, उसे बंधन होता है। यानी कि करती है कोई और ही शक्ति, वह 'व्यवस्थित शक्ति'। बाकी, उसमें मूल रूप से साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। इस प्रकार से यह सब विज्ञान से उत्पन्न हो गया है। करता कोई और है लेकिन आप मानते हो कि, 'मैं यह कर रहा हूँ', बस इतना ही है, इसी को अहंकार कहते हैं। यह अहंकार चला जाए तो यह सब व्यवस्थित है और जब तक अहंकार है तब तक दखल दिए बगैर रहता नहीं है। दखल तो, 'ऐसा करूँ और वैसा करूँ', ऐसे दखल करता है, उससे कुछ नहीं मिलता।

यदि आपको अंतिम स्टेशन पर (मोक्ष में) जाना है तो कुछ भी नहीं करना है। आपको तो किसी और स्टेशन पर जाना है, बीच वाले स्टेशन पर (चार गतियों में) जाना है न? क्योंकि जहाँ करना होता है, वहाँ तो अंतिम स्टेशन हो ही नहीं सकता न! जहाँ करना होता है, वहाँ तो बल्कि भ्रांति बढ़ती जाती है। कर्तापन, वही भ्रांति है। तो फिर इससे तो वापस कर्तापन और भी बढ़ता है कि, 'यह करो और वह करो, फलाना करो और ऐसे करो'। यहाँ करने का मार्ग नहीं है, यह समझने का मार्ग है।

अक्रम में पूरा का पूरा कर्ता पद ही खत्म हो जाता है, कर्ता व्यवस्थित ही है, वह आ गया, और फिर पद्धतिनुसार ही है। कर्ता कोई और चीज़ है और 'हम करते हैं' ऐसा कहते हैं, इसलिए हमें बंधन होता है। वह कर्तापन छूट जाए तो हम छूट जाएँगे।

(सूत्र-14)

व्यवहार क्या है, इतना ही यदि समझ लें तो भी मोक्ष हो जाएगा। व्यवहार सारा 'रिलेटिव' है और ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट्स। 'रिलेटिव' का अर्थ क्या है? 'सुपरफ्लुअस'। व्यवहार यानी 'सुपरफ्लुअस'।

संसार में ड्रामेटिक (नाटकीय) रहना है। ये जो सारी क्रियाएँ हैं, उन्हें खुद की क्रियाएँ मान ली हैं। वे गलत 'बिलीफ' (मान्यता) हो गई हैं। यह 'सुपरफ्लुअस' है। इसे मन में रखने जैसा नहीं है, चित्त में फोटोग्राफी लेने जैसा भी नहीं है। इसलिए हम कहते हैं न, कि आपको 'यह' ज्ञान दिया है, अब आप 'होम डिपार्टमेन्ट' में अपने रूम में रहो और 'फॉरेन' में 'सुपरफ्लुअस' रहना। यह व्यवहार सारा 'रिलेटिव' है। सिर्फ, 'रियल' ही निश्चय है, हकीकत स्वरूप है, वास्तविक है।

ज्ञानी पुरुष व्यवहार में 'सुपरफ्लुअस' रहते हैं इसलिए सभी उनसे खुश रहते हैं। क्योंकि लोगों को 'सुपरफ्लुअस' ही चाहिए। लोगों को ज़्यादा आसक्ति अच्छी नहीं लगती।

आप खुद शुद्धात्मा और यह सारा व्यवहार उपलक है यानी कि 'सुपरफ्लुअस' करना है। खुद को 'होम डिपार्टमेन्ट' में रहना है और 'फॉरिन' में 'सुपरफ्लुअस' रहना है। 'सुपरफ्लुअस' यानी तन्मयाकार वृत्ति नहीं, ड्रामेटिक, वह। सिर्फ यह

'ड्रामा' ही करना है। 'ड्रामा' में नुकसान हुआ तब भी हँसना और नफा हुआ तब भी हँसना। 'ड्रामा' में दिखावा भी करना पड़ता है, नुकसान हुआ हो तो वैसा दिखावा करना पड़ता है! मुँह से बोलते भी हैं कि बहुत नुकसान हुआ, लेकिन भीतर तन्मयाकार नहीं होते। हमें 'लटकती सलाम' रखनी है। कई लोग नहीं कहते कि भाई, मुझे तो इसके साथ 'लटकती सलाम' जैसा संबंध है। उसी तरह सारे जगत् के साथ रहना है। जिसे 'लटकती सलाम' पूरे जगत् के साथ आ गई, वह ज्ञानी हो गया। इस देह के साथ भी 'लटकती सलाम'! हम निरंतर सभी के साथ 'लटकती सलाम' रखते हैं, फिर भी सब कहते हैं कि, 'आप हम पर बहुत अच्छा भाव रखते हैं'। मैं व्यवहार सभी करता हूँ लेकिन आत्मा में रहकर। व्यवहार में भी जब जागृति सहित रहें तब 'प्रोगेस' (प्रगति) हुई कही जाएगी।

(सूत्र-15)

अगर आपको छूटना हो तो आपको स्पर्धा में नहीं रहना चाहिए। जब तक स्पर्धा में रहेंगे, तब तक सामने वाला अपने दोष छुपाएगा और आप अपने!

जहाँ देखो वहाँ 'रेसकोर्स' क्योंकि सभी लोग रेसकोर्स में उतरे हुए हैं। घर में 'वाइफ' के साथ भी 'रेसकोर्स' खड़ा हो जाता है! दो बैल साथ में चल रहे हों और एक ज़रा आगे बढ़ने लगे न, तो दूसरा साथ वाला भी ज़ोर लगाता है फिर।

प्रश्नकर्ता : ऐसा किसलिए?

दादाश्री : 'रेसकोर्स' में उतरे हैं इसलिए। साथ वाला आगे बढ़ रहा हो तो इसे ईर्षा होती है कि कैसे करके वह पीछे छूट जाए!

इस घुड़दौड़ में किसी का नंबर नहीं लगा है। मैं इस घुड़दौड़ में नहीं उतरता। इस घुड़दौड़ में हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं तब भी किसी का नंबर नहीं लगता। यों होता तो है अक्ल का बोरा! और अंत में हाँफकर मर जाता है तब कहता है 'वह मुझे धोखा दे गया और वह मुझे धोखा दे गया'। अस्सी साल की उम्र में भी तुझे धोखा दे गया!

इस 'रेसकोर्स' में अभी तक किसी का नंबर नहीं लगा। सिर्फ हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं। 'हम' इस भागदौड़ में कभी नहीं उतरते। 'हम' तो एक ही शब्द कहते हैं कि, 'भाई, हम में बरकत नहीं है'। हारना ढूँढ निकालो! यह नई खोज है हमारी। जीता हुआ इंसान कभी भी हार सकता है, लेकिन जो हारकर बैठा है न, वह कभी भी नहीं हार सकता। जीतने के लिए निकला न, तभी से फेल कहा जाता है।

अनंत जन्मों तक इस 'रेसकोर्स' में दौड़ता रहेगा फिर भी अंतिम दिन तू धोखा खाएगा, ऐसा यह जगत् है। सब बेकार जाएगा। ऊपर से बेहिसाब मार खाएगा। इसके बजाय तो भागो यहाँ से, अपनी असल जगह ढूँढ निकालो, जो अपना मूल स्वरूप है।

(सूत्र-16)

'जान-बूझकर ठगे जाने' जैसी प्रगति इस संसार में और कोई भी नहीं है। यह बहुत ऊँचा सिद्धांत है।

यह (मेरा हेतु) मोक्ष में जाने का था न, इसलिए दूसरी बाबतों की मुझे ज़्यादा दरकार नहीं थी। यानी, मैं ऐसा मानता था कि ठगने वाले को भी असंतोष नहीं होना चाहिए। इसलिए एक बार कोई ठग गया तो फिर से ठगे जाने की मैं गुंजाइश

रखता था कि उस बेचारे को संतोष हो जाए। किसी भी तरह, अगर मान खाने की आदत हो तो फिर मान-तान देकर भी मेरा रास्ता तो साफ हो जाएगा न! मैं अपमान करूँगा तो सभी लोग मुझे पकड़कर रखेंगे। उन्हें कहाँ मोक्ष में जाना है? नहीं जाना है। इसलिए, किसी भी तरह से लोगों को मान देकर, तान देकर, पैसे देकर भी, यहाँ से भाग जाओ।

सभी के अहम् को पोषण देकर वीतराग चले जाते हैं! उस बेचारे के अहम् को पोषण मिला और अपना छुटकारा हो गया न! हमने पूरी ज़िंदगी ठगे जाने का ही व्यापार किया था। जो ठगे जाते हैं, उन्हें भगवान कहते हैं। हमेशा ठगे जाते हैं। मैं ज़िंदगीभर ठगा गया इसलिए मुझ में भगवान प्रकट हुए, वर्ना होते क्या?

'ज्ञानी पुरुष' का तो आज यह शरीर है और कल यह बुलबुला फूट जाएगा तो क्या मोक्षमार्ग खत्म हो जाएगा? तब कहे, 'नहीं, इतनी शर्तें होंगी कि जिसे मोक्ष के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की कामना नहीं है और जिसे खुद जान-बूझकर धोखा खाना है, यदि ऐसे कुछ लक्षण उसमें खुद में होंगे न, तो उसका मोक्ष कोई रोकने वाला नहीं है। यों ही, अकेला ही, ज्ञानी के बिना भी दो अवतारी होकर वह मोक्ष में चला जाएगा!'

जगत् से ठगे जाकर भी मोक्ष में चले जाने जैसा है। खराब समय आ रहा है। बयासी हज़ार वर्षों तक तो मनुष्य को ज़रा सी भी फुरसत नहीं मिलने वाली। इतने भयंकर दु:खों में, यातना में रहेंगे सब लोग, मनुष्य जन्म लेंगे फिर भी।

प्रश्नकर्ता : बयासी हज़ार वर्ष?

दादाश्री : हाँ। इसलिए तो हम कहते हैं कि चेतो, चेतो, चेतो (सावधान हो जाओ)। जो जान-बूझकर ठगा जाता है वह मोक्ष का अधिकारी है! इसलिए तो कवि ने कहा है न कि, 'उठा लो फायदा इस अंतिम मौके का'। अंतिम मौके का फायदा उठा लो, कहते हैं। उसके बाद फिर से (अन्य कोई) आने वाले होंगे, वे आएँगे।

(सूत्र-17)

लघुत्तम में तो हमेशा की 'सेफसाइड' है, गुरुत्तम वाले को डर रहता है!

'इस' अक्रम विज्ञान का 'फाउन्डेशन' क्या है? लघुतम भाव में रहना और अभेद दृष्टि रखना। जीवमात्र के प्रति, पूरे ब्रह्मांड के जीवों के प्रति अभेद दृष्टि रखना, यही इस विज्ञान का 'फाउन्डेशन' है। यह विज्ञान कोई यों ही बगैर 'फाउन्डेशन' का नहीं है।

लघुतम तो अपना केन्द्र ही है। इस केन्द्र में बैठे-बैठे गुरुतम प्राप्त होगा। अपनी तो नई 'थ्योरीज़' हैं सारी, बिल्कुल नई!

प्रश्नकर्ता : इस लघुतम का अर्थ कैसे निकाला? अपना जो अहंकार है, वह अहंकार ज़ीरो डिग्री पर आ जाए तो वह लघुतम है?

दादाश्री : नहीं। अहंकार तो वैसे का वैसा ही रहता है। लेकिन अहंकार की मान्यता ऐसी हो जाती है कि, 'मैं सब से छोटा हूँ' और वह भी एक प्रकार का अहंकार ही है। ऐसा है, इस लघु का अर्थ 'छोटा हूँ' हुआ। फिर लघुतर अर्थात् छोटे से भी छोटा हूँ और लघुतम अर्थात् सभी मुझसे बड़े हैं, ऐसा अहंकार। यानी वह भी एक प्रकार का अहंकार है!

अब जो गुरुतम अहंकार है, यानी कि बड़े होने की भावनाएँ, 'मैं इन सभी से बड़ा हूँ', ऐसी जो मान्यताएँ हैं, उनसे यह संसार खड़ा हो गया

है। जबकि लघुतम अहंकार से मोक्ष की तरफ जा सकते हैं। लघुतम अहंकार अर्थात् 'मैं तो इन सब से छोटा हूँ', ऐसा करके सारा व्यवहार चलाना। उससे मोक्ष की तरफ चले जाते हैं। 'मैं बड़ा हूँ', ऐसा मानता है, इसलिए यह संसार 'रेसकोर्स' में उतरता है और वे सभी भान भूलकर उल्टे रास्ते पर जा रहे हैं। यदि लघुतम का अहंकार हो न, तो वह लघु होते-होते एकदम लघुतम हो जाता है। फिर वह परमात्मा बन जाता है!

(सूत्र-18)

यह ज्ञान आकर्षक है इसलिए मौन रहना। जब मौन हो जाओगे तब जगत् को समझ गए, ऐसा माना जाएगा।

यदि पूर्ण काम कर लेना हो तो सावधान रहना। जब तक पूर्णाहुति नहीं हो जाती तब तक बोलने की बात में पड़ना ही मत। यह पड़ने जैसी चीज़ नहीं है। हाँ, आप किसी को इतना कह सकते हैं कि, 'वहाँ पर सत्संग अच्छा है। ऐसा सब है, वहाँ पर जाओ'। इतनी बातचीत कर सकते हैं। उपदेश नहीं दे सकते। यह उपदेश देने जैसी चीज़ नहीं है। यह 'अक्रम विज्ञान' है। वीतराग की वाणी का एक शब्द भी बोलना, वह तो सब से बड़ी मुश्किल है!

किसी जगह पर कोई बात करते हो? बातचीत में कहीं भी पड़ना ही मत, क्योंकि लोग तो सुनेंगे, लेकिन खुद की क्या दशा होगी? लोगों को तो कान से सुनकर निकाल देना है लेकिन खुद को भी 'इन्टरेस्ट' आता है इसमें। क्योंकि अभी 'इगोइज़्म' हैं न, वे सभी अंदर ताक लगाकर बैठे ही रहते हैं। तो धीरे-धीरे उन्हें खुराक मिल जाती है।

'दादा' का ज्ञान जिसने प्राप्त किया है, उस ज्ञान में से जो माल निकलता है न, उसे सुनकर तो पूरी दुनिया सबकुछ धर देगी। और धर देने पर तो क्या होता है? फँसता है फिर! सभी कषाय जो उपशम हो चुके थे न, वे फटाफट जागृत हो उठेंगे। आकर्षण वाली वाणी है यह। यह ज्ञान आकर्षक है इसलिए मौन रहना है।

यह तो, हमारा दिया हुआ 'ज्ञान' परिणमित हुआ तो परिणमित होकर फिर उसमें उगता है वापस। हमारा दिया हुआ बीज के रूप में पड़ा रहता है, वह बाद में उगता है। तब 'दादाजी ऐसा कहते थे', ऐसे करके बात करोगे लेकिन जो ऐसी वाणी निकलेगी, तो कुछ दिन तो ऐसा लगेगा कि ये 'दादाजी' जैसा ही कह रहे हैं। बाद में न जाने कहाँ ले जाएगा! कुछ दिन बाद गिरा देगा, वह तो छोड़ेगा नहीं न!

गोशाला जो था न, वह पहले तो महावीर भगवान का शिष्य था, खास, 'स्पेशल' शिष्य। लेकिन अंत में वह विरोधी बनकर खड़ा रहा। गोशाला महावीर भगवान के पास बहुत समय तक रहा। फिर उसे ऐसा लगा कि मुझे यह सारा ज्ञान समझ में आ गया, इसलिए भगवान से अलग होकर कहने लगा कि 'मैं तीर्थंकर हूँ, वे तीर्थंकर नहीं हैं'। और कई बार ऐसा भी कहता था कि, 'वे भी तीर्थंकर हैं और मैं भी तीर्थंकर हूँ'। अब ऐसा रोग घुस गया, फिर क्या दशा होगी उसकी?

अब, जब महावीर भगवान के पास था, तब भी वहाँ पर सीधा नहीं रहा। तो हमारे पास बैठा हुआ कैसे सीधा रहेगा? यदि कुछ गड़बड़ हो जाए तो क्या दशा होगी? और वह तो चौथे *आरे* की बात थी। यह तो पाँचवाँ *आरा* (कालचक्र का एक हिस्सा) है, अनंत जन्म खराब कर देगा। अनादि से यों ही मार खाई हैं न, लोगों ने! यही की यही मार खाते रहे हैं। ज़रा सा भी स्वाद आ जाए कि चढ़ ही जाता है ऊपर!

जिसकी जागृति बढ़ जाती है, उसे हमें बहुत सावधान करना पड़ता है। लेकिन अब यदि वह आज्ञा में रहे न, तो उसकी 'सेफसाइड' हो जाएगी। पर 'सेफसाइड' में आना बहुत मुश्किल चीज़ है।

(सूत्र-19)

किस चीज़ की भीख है? पूजे जाने की भीख है। और यों 'नमस्कार' करें तो खुश। अरे! ये तो नर्क में जाने की निशानियाँ हैं! यह तो बहुत ही जोखिमदारी है! ऐसी आदत पड़ गई हो तो वह जाती नहीं है।

क्या पूजे जाने की कामना होती है? बता देना, मैं उसे दबा दूँगा। हाँ, यह जड़ काट देंगे तो फिर बंद हो जाएगा। यह कामना बहुत ज़ोखिमी है। कामना नहीं होती न? कभी होने लगेगी, क्या! अत: ऐसा मानकर चलना कि जोखिम है। क्योंकि लोग 'नमस्कार' करते हैं न, तब चाय की लत की तरह लत लग जाती है। फिर जब नहीं मिलता है न, तब परेशान हो जाता है। उसके बाद कुछ नाटक करके भी 'नमस्कार' करवाता है। अत: जोखिम है, सावधान रहना।

पूजे जाने की कामना, उसके जैसा भयंकर कोई रोग नहीं है। सब से बड़ा रोग हो तो पूजे जाने की कामना! किसे पूजना है? आत्मा तो पूज्य ही हैं। देह की पूजा करना रहा ही कहाँ फिर? लेकिन पूजे जाने की इच्छाएँ-लालच हैं ये सारा। देह की पूजा करवाकर क्या हासिल करना है? जिस देह को जला देना है, उसकी पूजा करवाकर क्या हासिल करना है? लेकिन यह लालच ऐसा है कि 'मेरी पूजा करे'। यानी ये पूजे जाने की लालसाएँ हैं। नहीं तो मोक्ष कोई मुश्किल नहीं है। ऐसी जो नीयत होती है न, उससे मुश्किल है।

ऐसी इच्छा होना भी भयंकर गुनाह है। ऐसी इच्छा कभी हुई थी? अंदर थोड़ा मीठा लगता है? यह तो हम सावधान कर रहे हैं। सावधान नहीं करेंगे तो फिर गिर जाएगा न! अच्छी जगह पर आने के बाद गिर जाए तो फिर बेकार हो जाएगा, 'यूज़लेस' हो जाएगा और चोट भी बहुत लगेगी। नीचे हो और गिर जाए तो बहुत चोट नहीं लगती। बहुत ऊपर तक दौड़कर फिर यदि गिर जाए तो बहुत चोट लगती है। इसलिए जहाँ हो वहीं पर रहना, नीचे मत उतरना वापस।

कोई भी स्वतंत्र शब्द मत लाना। यहाँ से ले जाकर उसी शब्द का उपयोग करना, स्वतंत्र नया मत रखना। नया स्टेशन भी मत बनाना। या बनाया है? नींव नहीं डाली? नहीं बनाया? चेतावनी तो होनी चाहिए न! वर्ना न जाने कहाँ जाकर खड़े रहोगे! अभी तो मार्ग बहुत अलग तरह का है यह। कितनी सारी ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं। कभी भी देखी नहीं हों, ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं! जहाँ बड़े-बड़ों ने धोखा खाया है वहाँ आपकी क्या बिसात? इसलिए 'दादा भगवान' के इस मार्ग पर चलो अच्छी तरह। अरे! 'क्लिअर रोड है फर्स्ट क्लास'! जोखिम नहीं, कुछ भी नहीं।

(सूत्र-20)

अपना तो मोक्षमार्ग है, यहाँ तो गुप्त वेश में निकल जाना है।

जैसा हो गया है वैसा मुझे कह दे, उसी को आलोचना कहते हैं। जो हो गया, उसमें हर्ज नहीं है। उन सब के लिए तो क्षमा ही है। लेकिन जैसा हुआ वैसा कह दे, तब से वह आलोचना कहलाती है। यानी वह उस रास्ते से वापस लौट गया। फिर हम संभाल लेंगे। यह तो जोखिमदारी वाला रास्ता है, इसलिए सावधान रहना। बहुत

जोखिम है। एक अक्षर भी मत बोलना और बोलना ही हो तब भी मुझे बताना, मैं कहूँगा कि 'बोलो अब आप'। बाकी बहुत जोखिम है, एक अक्षर भी बोलना हो तो भी बहुत जोखिम है।

जगत् का कल्याण जब होना होगा तब होगा, आपको अपने आप ही जब कुदरत निमित्त बनाए, उसके बाद बनना न! आप तैयार होने मत जाना। तैयार होने जैसी चीज़ नहीं है यह! हमारी सिद्धियाँ बेचने लगोगे, तो जगत् क्या नहीं देगा? लेकिन आपकी मनुष्यरूपी पूँजी खत्म! अरे, खत्म ही नहीं, बल्कि मनुष्यरूपी पूँजी चली जाएगी और नर्क के अधिकारी बन जाओगे। अपना तो मोक्षमार्ग है, यहाँ तो गुप्त वेश में निकल जाना है।

(सूत्र-21)

जब तक जगत् दोषित दिखाई देगा तब तक भटकते रहना पड़ेगा और जब जगत् निर्दोष दिखाई देगा, तब आपका छुटकारा होगा।

यदि खुद का दोष समझ में नहीं आए और औरों के ही दोष मालूम पड़ें तो, वह अज्ञानी की निशानी है। वह निरंतर बंधन में आता रहता है और उस कारण मार खाता रहता है। जबकि ज्ञानी की निशानी क्या है? ज्ञानी की कृपा कौन प्राप्त कर गया? तुरंत ही खुद के दोष दिखाई दें, जिसे ऐसी जागृति है और जिसे निरंतर यही भाव रहता है कि इसमें किस प्रकार से छूटूँ।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा न देखें तब ही दोषित दिखता है न?

दादाश्री : दोषित कब दिखता है कि शुद्धात्मा न देखें तब दोषित दिखता है और दूसरा उसका हिसाब नहीं निकाला उसने। एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) यदि हिसाब निकाले तो वह खुद ही कहेगा, दोष देखने वाला ही कहेगा, 'भाई मेरी ही भूल है यह तो।' इसीलिए यों सिर्फ शुद्धात्मा देखने से ही कुछ खतम नहीं होता है। वह तो आगे ही आगे चलता रहता है। यानी पद्धति के अनुसार निकाल होना चाहिए। इसलिए सार के परिणाम स्वरूप निकाल होना चाहिए कि किस तरह दोष नहीं है उसका। हाँ, उसका दोष है नहीं और यह दिखता क्यों है?

भगवान महावीर ने कहा है कि, 'पूरा जगत् निर्दोष है, जो कुछ भी भूल थी वह मेरी ही थी और वह पकड़ में आ गई'। और वह मुझे भी पकड़ में आ गई, मेरी भूल। और अब आपको क्या कहता हूँ? आपकी भूल पकड़ो। मैं दूसरा कुछ कहता ही नहीं हूँ। जो पतंग की डोर मेरे पास है, वैसी पतंग की डोर आपके पास है। शुद्धात्मा का ज्ञान खुद ने प्राप्त किया, इसलिए पतंग की डोर हाथ में ही है। पतंग की डोर हाथ में नहीं हो और गोता खाए और चीखें-चिल्लाएँ, कूद-फाँद करें, उससे कुछ मिलता नहीं है। पर हाथ में डोर हो और खींचें तो गोते खाना बंद हो जाता है या नहीं हो जाता? वह डोर मैंने आपके हाथ में दे दी है।

इसलिए आपको यह निर्दोष देखना है। निर्दोष दृष्टि से ऐसे शुद्धात्मा देखकर 'उसे' निर्दोष बनाना है। वह थोड़ी देर बाद फिर अंदर से चीखेगा-चिल्लाएगा। 'यह ऐसा-ऐसा करता है, उसे क्या निर्दोष देखते हो?' उस समय एक्ज़ेक्टली निर्दोष देखना है और जैसा है वैसा एक्ज़ेक्टली निर्दोष ही है।

क्योंकि यह जगत् जो है न, वह आपको दिखाई देता है वह सब आपका परिणाम दिखाई देता है, कॉज़ेज़ नहीं दिखते। अब परिणाम में किसका दोष?

प्रश्नकर्ता : कॉज़ेज़ का दोष।

दादाश्री : कॉज़ेज़ करने वाले का दोष। यानी परिणाम में दोष किसी का नहीं होता है। जगत् परिणाम स्वरूप है। यह तो, एक मैंने आपको बहुत ही छोटा हिसाब (सार) निकालना सिखाया है। और भी बहुत सारे हिसाब (सार) हैं। कितने ही हिसाब (सार) इकट्ठे हुए, तब मैंने एक्सेप्ट किया, जगत् निर्दोष है ऐसा। नहीं तो यों ही एक्सेप्ट होता है क्या? यह कोई गप्प है? आप अपनी प्रतीति में ले जाना कि यह जगत् निर्दोष है, ऐसा सौ प्रतिशत है, निर्दोष ही है। दोषित दिखाई देता है, वही भ्रांति है। और इसीलिए यह जगत् खड़ा हुआ है बस, खड़ा होने के कारण में दूसरा कोई कारण नहीं है। जगत् जब तक दोषित दिखाई देता है, तब तक भटकते रहना है और जब जगत् निर्दोष दिखाई देगा, तब आपका छुटकारा होगा।

(सूत्र-22)

जिसे इस जगत् से भाग छूटना है, जिसे यह जगत् अनुकूल नहीं आता, उसे तो 'यही' रास्ता अपनाना पड़ेगा कि 'किसी जीव को मन से भी न मारो'! अन्य कोई रास्ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आप तो समझ गए होंगे कि इस हथियार का काम ही नहीं है।

दादाश्री : हाँ, हथियार काम का ही नहीं है। इस हथियार की ज़रूरत है, ऐसा विचार ही नहीं आया। हमने (कषायरूपी) तलवार जब से जमीन पर रखी तब से उठाई नहीं। सामने वाला शस्त्रधारी हो, तब भी हम शस्त्र धारण नहीं करते और अंत में वही रास्ता लेना पड़ेगा। जिसे इस जगत् में से भाग छूटना है, अनुकूल नहीं आता, उसे अंत में यही रास्ता लेना पड़ेगा, दूसरा रास्ता नहीं है।

संसार में इस प्रकार जीना चाहिए कि हम किसी के लिए दु:खदायी न हो जाए। हमसे किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं हो, यही सब से बड़ा ध्येय होना चाहिए।

यदि आप से किसी को भी दु:ख हो जाए तो उसका तो मोक्ष रुक ही जाएगा लेकिन वह आपका मोक्ष भी रोक देगा। इसलिए किसी को भी दु:ख नहीं देना चाहिए। ऐसी आशा कभी मत रखना कि किसी को दु:ख देकर किंचित्मात्र भी सुखी हो सकते हैं। यानी सभी को सुख कैसे मिले यह आपको देखना है, और कुछ नहीं देखना है।

किसी को दु:ख नहीं देने की दृष्टि आज से ही तय कर लो कि, 'मुझे इस जगत् में किसी को ज़रा सा भी दु:ख नहीं देना है। मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी कष्ट नहीं देना है', ऐसा तय करोगे न, तो भीतर वैसा ही चलेगा। आप जैसा तय करोगे भीतर में वैसा ही चलेगा। जैसा आपका निश्चय होगा वैसा चलेगा। इस दुनिया में 'मन-वचन-काया से किसी जीव को किंचित्मात्र दु:ख न हो', तो पूरा बहीखाता साफ। हम आपको ऐसी समझ दे रहे हैं। जिस समझ से हम छूट सके हैं, जिस समझ से हम बंधन मुक्त हो गए हैं, जिस समझ से सत्ताईस सालों से हमें टेन्शन नहीं हुआ, जिस समझ से हम इन्डिपेनडेन्ट (स्वतंत्र) हो गए हैं, वही समझ आपको सिखा रहे हैं।

(सूत्र-23)

प्रत्येक मनुष्य को इन तीन बातों का ख़याल तो रखना ही चाहिए : मैं कौन से स्टेशन से आया हूँ? कौन से स्टेशन पर उतरा हूँ? कौन से स्टेशन पर जाना है?

जब तक 'स्टेशन' नहीं आता, तब तक

कहाँ उतरेंगे ? यह तो 'स्टेशन' आ गया है इसलिए आपको उतरने का रास्ता बता रहे हैं। वर्ना यदि 'स्टेशन' नहीं आया हो तो यों ही पड़े रहना पड़ेगा न! भटकते ही रहता है न!

ऐसा है, कोई व्यक्ति 'उधना' स्टेशन पर बैठा रहे और कहे कि मुझे इस वेस्टर्न रेल्वे के आखिरी स्टेशन तक जाना था, वहाँ मैं पहुँच चुका हूँ। तो मैं कहूँगा कि, 'भाई, यहाँ पर मत बैठे रहना। अभी तो बहुत आगे जाना है'। और मैं कहूँगा कि 'गाड़ी में बैठ जा, चुपचाप'। यानी मेरा काम क्या है, कि जो इधर-उधर बैठे हुए हैं, उन्हें वहाँ से उठाकर गाड़ी में बैठा देता हूँ। यह मेरा काम है। मन में सबकुछ मान बैठें, तो उससे कुछ होगा नहीं।

'उधना' स्टेशन पर बैठे रहें और मान लें कि वेस्टर्न रेल्वे का आखिरी स्टेशन आ गया और पूरा हो गया, ऐसा मानें तो क्या पूर्णाहूति हो जाएगी ? कहाँ पर बैठे हैं, उसका पता होना चाहिए या नहीं होना चाहिए ?

किसी भी स्टेशन पर बैठे रहने जैसा है ही नहीं। वर्ना फँस ही गए समझना। लोग व्यवहार से चिपट जाते हैं, वह उनकी भूल है। चिपट जाते हैं, इसीलिए तो जगत् की मार खानी पड़ती है। व्यवहार में प्रवेश करते ही यह सब मिल जाता है। यहाँ व्यवहार सारा संयोगों से भरा हुआ है और जहाँ संयोग नहीं होते, वहाँ तक जाना है, सिद्धपद में जाना है।

हम ऐसा तय कर लें कि, 'भाई, कौन से स्टेशन जाना है ?' तब कहते हैं, 'भाई, आणंद जाना है'। तो आणंद अपने *लक्ष* (जागृति) में रहा करेगा। यानी आपको जिस गाँव जाना है, उसका ज्ञान जानने जैसा है। बाकी दूसरा सब तो अपने आप ही आएगा। जिस गाँव जाना है उस गाँव का ही आराधन करना पड़ेगा, वर्ना अन्य स्टेशन पर उतर पड़ोगे! हम और ही गाँव के प्रवासी हैं, इस गाँव के प्रवासी नहीं हैं। हम मोक्षमार्ग के प्रवासी हैं, संसारमार्ग के प्रवासी नहीं हैं। यानी कि मोक्ष में जाना है, सिद्धगति में जाना है, तो उसका *लक्ष* रहा करेगा।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर जाना हो तो मनुष्य कौन सी स्थिति में वहाँ जा सकता है ?

दादाश्री : यहाँ पर अपने गुणधर्म बदल गए होंगे तो महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे। अभी यहाँ पाँचवाँ *आरा* चल रहा है। अतः चौथे *आरे* के जो मनुष्य थे, उनके बजाय ये पाँचवे *आरे* के लोगों के स्वभाव बिगड़ गए हैं। अब वह स्वभाव, जब यहाँ पर 'ज्ञान' देते हैं तब सुधरता है। फिर दखल नहीं करते, किसी को दुःख नहीं दे, ऐसा हो जाता है, तो फिर क्षेत्र का स्वभाव ऐसा है कि यहाँ से खिंचकर जहाँ चौथा *आरा* चल रहा है वहाँ चला जाता है।

जब वह वहाँ के जैसा ही बन जाएगा, चौथे *आरे* जैसा इंसान बन जाएगा, इस पाँचवे *आरे* के दुर्गुण चले जाएँगे, तब वहाँ जाएगा। कोई गाली दे फिर भी मन में उसके लिए खराब भाव न आएँ तब वहाँ जाएगा।

अतः अभी तो इस जन्म में हमें ऐसा कोई निबेड़ा लाना है जिससे क्षेत्र बदले। लोगों से ऐसी अपेक्षा न रहे। यानी ऐसा कुछ करना। जैसे-जैसे *निकाल* (निपटारा) करते जाएँगे वैसे-वैसे उस क्षेत्र के लायक बनते जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने यह क्षेत्र बदलने के लिए बताया कि खुद को ऐसा हो जाना चाहिए ताकि क्षेत्र बदल जाए।

दादाश्री : नहीं, आपका भाव वैसा रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह?

दादाश्री : जैसे-जैसे आप इन सभी का *निकाल* करते जाओगे, वैसे-वैसे उस क्षेत्र के लायक होते जाओगे।

यानी जितना हो सके उतना यह वाक्य आपको ध्यान में रखना है, जितना भी हम कहते हैं। यानी किसी भी तरह से सामने वाले के मन का समाधान करना चाहिए।

अर्थात् इस तरह सोचना है। यह कहीं एक दिन में हो जाए, ऐसा नहीं है। ज़िंदगीभर का सब काम आपको सौंप रहे हैं। आज से करने लगोगे तो कभी अंत आएगा! करने लगोगे तो, यानी सोचोगे तो ज़्यादा समझ में आएगा। ऐसा ध्यान में रहना चाहिए, *लक्ष* में रहना चाहिए। शुद्धात्मा तो हो गए उसमें दो राय नहीं है, लेकिन प्रतीति से हुए हैं, *लक्ष* से हुए हैं। यानी जागृति में रहे लेकिन जितना अनुभव में आए...

प्रश्नकर्ता : अनुभव में आए, वह काम का।

दादाश्री : अनुभव में कमी किस वजह से है? तब कहते हैं, किसी को आपके बाहर के व्यवहार से असंतोष है, वह आपकी कमी है। उसके लिए जितना हो सके उतना उसे डिग्रियाँ समझाकर, किसी भी तरह से वह आपको छोड़ दे, ऐसा करना। यदि रास्ते में आपको चोर मिल जाए तो चोर आपको जाने दे, ऐसा कुछ करना।

प्रश्नकर्ता : किसी भी तरह से हल लाना है। किसी भी तरह से वे आपको जाने दे।

दादाश्री : वे कहेंगे, 'जाओ, चले जाओ'। तो आप समझना कि छूट गए। झगड़ा करें तब तो अंत ही नहीं आएगा। चोरों ने छोड़ दिया तो आपको छुटकारा मिल गया। आपको कैसे भी करके समझाकर भी हल लाना चाहिए, ऐसा भाव रखना चाहिए, तो फिर हल आ जाएगा।

(सूत्र-24)

'अक्रम मार्ग' समझना है। समझ से समाना (स्वरूप में स्थिर होना) है। 'अक्रम', वह क्रियामार्ग नहीं है, 'समभाव से *निकाल*' करने का मार्ग है। 'समभाव से *निकाल*' करना तय किया, तभी से ही वीतरागता की शुरुआत हो जाती है। अंत में संपूर्ण रूप से वीतराग बनने तक वीतरागता कही जाएगी!

इस 'अक्रम' में 'समभाव से फाइलों का *निकाल*' - वह तो एक ग़ज़ब की चीज़ है!

फाइलों का समभाव से *निकाल* किया था, या यों ही है सब? समभाव से *निकाल* कर लिया, तो किसी के साथ बैर नहीं बंधेगा। बैर नहीं बाँधना और पुराने बैर का *निकाल* कर देना। यदि आपको कुछ पुरुषार्थ करना नहीं आए तो आखिर में इतना करना; बैर का *निकाल* करना। किसी से बैर बंध गया हो, तो पता चलता है न, कि इसके प्रति बैर ही है। 'मैं उसे परेशान नहीं करता, फिर भी वह मुझे परेशान करता रहता है।' यानी कि उसके साथ बैर बंधा है, ऐसा पता चले तो उसके साथ *निकाल* करना। यदि उस बैर का *निकाल* हो गया तो, उसे सब से बड़ा पुरुषार्थ कहा जाएगा। यह जगत् बैर से ही खड़ा रहा है। इसका 'बेसमेन्ट' अन्य कोई चीज़ नहीं है, जगत् का 'बेसमेन्ट' बैर ही है। यह जगत् राग से नहीं खड़ा है या प्रेम से नहीं खड़ा है, लेकिन बैर से ही खड़ा है। इसलिए बैर मत बाँधना। आपसे भूल हो जाए तो माफी माँग लेना और उस भूल का हल ला देना, लेकिन केस का हल ला देना।

प्रश्नकर्ता : सामने वाली पार्टी यदि तैयार न हो तो समभाव से *निकाल* कैसे करें? एक हाथ से ताली कैसे बजा सकते हैं?

दादाश्री : आप अपने मन में तय करना कि, 'यह जो फाइल आ रही है, मुझे उसका समभाव से *निकाल* करना है', इतना ही करना है। सामने वाला ताली बजाए या नहीं बजाए, उससे आपको लेना-देना नहीं है। आप अपनी भावना बदलो तो तुरंत सब ठीक हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अब ये जो फाइलें हैं, उन सभी को तो पूरी करनी पड़ेगी न? छोटी या बड़ी, सभी फाइलें?

दादाश्री : वह तो पूरी करने पर ही मुक्ति होगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कुछ फाइलों का एक तरफा *निकाल* करें तो? एक तरफा फाइल का *निकाल* हो सकता है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। फाइलों का *निकाल* होकर ही रहेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई बार हमें छूटना हो और सामने वाला नहीं छोड़ता, तो फिर खुद एक तरफा छूट सकते हैं या नहीं छूट सकते हैं?

दादाश्री : छूट सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से?

दादाश्री : अपनी वीतरागता देखकर। वह तो, यदि अपनी वीतरागता हो तो पूरा छूट सकते हैं। सामने वाला जमा करे या नहीं करे, वह आपको देखने की ज़रूरत नहीं है! वर्ना, यदि ऐसा होता तो कोई छूटता ही नहीं जगत् में।

(सूत्र-25)

'वीतराग' के पानी से चाहे कैसे भी दाग़ हों, धुल जाते हैं। पूरी दुनिया उसे घेर ले न, फिर भी 'वीतरागता' ऐसी शक्ति है कि कोई चीज़ उसे चिपक नहीं सकती! 'वीतराग' क्या कहते हैं? दुनिया तो चलती ही रहेगी। उसमें तू किसी तरह की दखल में मत पड़ना। यदि तुझे मोक्ष में आना है तो वीतरागता रख!

प्रश्नकर्ता : वीतराग दशा में रहने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : किसी के प्रति राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं करना, वही वीतरागता है। वैसा किया तो वीतराग दशा चूक गए। अगर वैसा हो गया तो जानना कि यह चूक गए। फिर से वापस साधना, अगर चूक गए तो फिर से साधना। ऐसा करते-करते स्थिर हो जाएँगे। जिन्हें ऐसा करना है वह तो निबेड़ा लाएगा ही न! छोटे बच्चे भी खड़े होते हैं और वापस गिर जाते हैं। उस बाबागाड़ी को वापस धकेलता है। फिर से गिर जाता है। फिर से खड़ा होकर बाबागाड़ी को धकेलता है। ऐसा करते-करते चलने लग जाता है न! तब क्या राग-द्वेष होते हैं? क्रोध-मान-माया-लोभ? नहीं न? तो फिर वह वीतरागता ही है न। अब दूसरा कुछ ढूँढने को नहीं रहा, वही वीतरागता है। वीतरागता और कुछ नहीं है। यों तो इंसान कहता है, 'नहीं-नहीं मुझे कोई राग-द्वेष नहीं हैं'। बड़े आए राग-द्वेष नहीं हैं वाले! देखो तो सही! जब इस तरह स्पष्टीकरण करते हैं, 'क्रोध-मान-माया-लोभ'। तब कहते हैं, 'वे तो हैं'। तो भाई, तू समझता ही नहीं है न राग-द्वेष को। क्रोध-मान-माया-लोभ का छोटा स्वरूप राग-द्वेष है, शॉर्ट स्वरूप। जब समभाव से फाइलों का *निकाल* करेगा न, तब वह वीतराग हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : किसी भी तरह राग-द्वेष रहित होना, वही वीतराग मार्ग है।

दादाश्री : किंचित्मात्र राग नहीं और किंचित्मात्र द्वेष भी नहीं। एकदम से नहीं हो सकेगा। लेकिन ऐसी भावना करने से, यों करते-करते धीरे-धीरे यदि ज्ञान मिल गया हो तो होगा, वर्ना नहीं हो सकेगा, लाख जन्मों में भी नहीं हो सकेगा।

यह *पुद्‌गल* (अहंकार) क्या कहता है कि 'तू शुद्धात्मा बन गया है तो ऐसा मत मानना कि तू मुक्त हो गया। तूने मुझे बिगाड़ा था इसलिए अब तू हमें शुद्ध कर, तो तू भी मुक्त और हम भी मुक्त'। तब पूछें, 'कैसे मुक्त करूँ?' तब वह कहता है, 'हम जो कुछ भी करें, उसे तू देख। और कोई दखल मत करना। राग-द्वेष रहित देखता रह'।

प्रश्नकर्ता : राग-द्वेष रहित देखते रहना है?

दादाश्री : देखता रह, बस। तो हम मुक्त। राग-द्वेष से हम मैले हो चुके हैं, तेरे राग-द्वेष की वजह से, तेरी वीतरागता से हम मुक्त हो जाएँगे। उसके बाद परमाणु शुद्ध हो जाएँगे।

(सूत्र-26)

वीतरागता ही भव पार उतरने के लिए है। यदि राग 'ज्ञानी' पर बैठ जाए तो वह 'प्रशस्त राग' हो गया। वह काम *निकाल* देगा। बाकी सभी जगह से राग खत्म हो जाएगा। क्योंकि 'ज्ञानी' वीतराग हैं। वीतरागों के प्रति राग सर्व दुःखों से मुक्त करवाने वाला है।

पहले वीतद्वेष हो जाते हैं, उसके बाद वीतराग हो जाते हैं। वीतद्वेष उत्पन्न होने के बाद सिर्फ राग बचता है। राग बाद में ही जाता है, ऐसा उसका स्वभाव है। क्योंकि आखिर में जब *पुद्‌गल* में से राग निकल जाता है तो वह ज्ञानी पुरुष पर आ जाता है। लेकिन वह राग भी कैसा? प्रशस्त राग।

प्रशस्त राग अर्थात् मोक्ष दिलवाने वाला राग। स्टेप्स चढ़ाता है यह राग। द्वेष को यों ही उड़ा देता है, फर्स्ट स्टेप से ही। अर्थात् सभी का हम पर राग है तो सही लेकिन वह प्रशस्त राग कहलाता है। वह सांसारिक राग नहीं है। उसमें सांसारिक भाव नहीं है, भौतिक नहीं है।

आपका द्वेष छूट गया है लेकिन आपका राग नहीं छूटा है। वह राग जो सभी जगह चिपका हुआ है न, वह वहाँ से मुझ पर आ जाता है। वह राग दुःखदाई लगता है। इसलिए कहता है, 'दादा पर जो राग है, वह?' वह तो प्रशस्त राग कहलाता है। जो राग प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है! और अगर ज्ञानी पुरुष पर राग हो जाए तो अच्छा है न! फिर सारी झंझट छूट जाएगी!

यह प्रशस्त राग रहे न, तो समझना कि अपना मोक्ष हो गया। क्योंकि यह सभी रागों को तोड़ देता है। बाहर के सभी मौज-मज़े, सभी रागों को तोड़ देता है यह राग। अतः यह जो प्रशस्त राग उत्पन्न हुआ है, इसे इस काल में मोक्ष कहना चाहिए।

'शुद्धात्मा' का *लक्ष* बैठने के बाद भी जब तक उसका अनुभव नहीं हुआ, तब तक 'ज्ञानी पुरुष' ही खुद का आत्मा हैं। 'दादा' की आराधना की, वही 'शुद्धात्मा' की आराधना करने के बराबर है और वही परमात्मा की आराधना है और वही मोक्ष का कारण है।

(सूत्र-27)

भाव से केवल शुद्धात्मानुभव के अलावा

इस जगत् की कोई भी (विनाशी) चीज़ मुझे नहीं चाहिए।

हमें अब ज्ञान के अलावा और कुछ भी नहीं चाहिए और चंदू का, जो सारा पौद्‌गलिक माल है, चंदू के व्यवस्थित में जो हो, वह भले ही हो। हमें कुछ भी नहीं चाहिए। इस संसार की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए। लेकिन 'मुझे' अर्थात् किसे, ऐसा तय करके बोलना चाहिए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और चंदूभाई को जो चाहिए, वह भले ही हो, उसमें मुझे हर्ज नहीं। और बाकी जो चीज़ें चाहिए, वे चंदूभाई को चाहिए, फिर वे ज़्यादा तो होगी ही नहीं न। व्यवस्थित में जो हो वह भले ही हो और न हो तो कुछ नहीं। क्योंकि वह एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित ही है। उससे आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। चंदूभाई मन में सोच सकते हैं, उनके सोचने पर आपको कोई आपत्ति नहीं उठानी है। लेकिन कोई चीज़ नहीं चाहिए अगर ऐसा भाव होगा न, वह सिन्सियरिटी होगी न, तो फिर कोई भी कर्म नहीं चिपकेगा। अगर कोई सुबह पाँच बार बोले कि, 'इस संसार की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए'। 'मुझे' अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा' (हूँ, ऐसा जिसे भान हुआ है, उसे), 'मुझे कोई भी चीज़ नहीं चाहिए', पाँच बार इस तरह बोलकर उसके प्रति सिन्सियर रहे तो उसे कोई भी कर्म नहीं बंधेगा। अत: यह ऐसा विज्ञान है कि यदि आप खुद के प्रति सिन्सियर रहते हो, तो कोई परेशानी नहीं आएगी! सिन्सियर अर्थात् किन्हीं भी संयोगों में कभी भी अपने ध्येय से विरुद्ध कभी भी न चले।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ऐसा निश्चय करे न, कि 'मोक्ष के अलावा कुछ भी नहीं चाहिए?'

दादाश्री : हाँ, कुछ भी नहीं चाहिए। चाहे कुछ भी आए फिर भी 'कुछ चाहिए ही नहीं', ऐसा निश्चय होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् मुख्य बात, मोक्ष का 'डिसीज़न' हो जाए तो फिर गाड़ी पटरी पर चढ़ेगी।

दादाश्री : 'डिसीज़न' तो हो चुका है मोक्ष का लेकिन 'यह नहीं चाहिए', ऐसा 'डिसीज़न' हो जाए, तब न! इसलिए हम सभी से कहते हैं न, कि 'इस दुनिया की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', ऐसा सुबह पाँच बार बोलना, उठते ही। तो उसका वैसा असर रहेगा।

(सूत्र-28)

ज्ञानी पुरुष की आज्ञा तो जन्मोंजन्म में भटकने से रोकने वाली दीवार है। 'ज्ञानी पुरुष' की आज्ञापूर्वक अंत तक का जो भी करना हो वह कर लेना चाहिए, ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलेगा! आप 'हमारी' 'पाँच आज्ञा' में रहो, वही पुरुषार्थ है, वही धर्म है! अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। उसमें सबकुछ आ गया।

शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया है न आपको, वह *लक्ष* अलख निरंजन का *लक्ष* कहलाता है। अब, हमारे पाँच वाक्यों में ही, पाँच आज्ञा में ही रहना है, दूसरा कुछ कठिन नहीं है। अब चूकना मत। बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। अब साक्षात्कार हो गया है, सबकुछ हो ही चुका है। अब, भगवान आपके पास से नहीं जाएँगे। यह सरल मार्ग तो शायद ही कभी मिल पाता है। यदि पुण्य का प्रताप बहुत हो तो मिलता है, तब फिर वहाँ पर प्रमाद करने का कोई अर्थ ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : प्रमाद नहीं करना है।

दादाश्री : हाँ, उससे तो चिपक ही जाना

है। बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलता। शुद्धात्मा कभी भी *लक्ष* में नहीं बैठता। वह अलख निरंजन है। किसी को *लक्ष* बैठा ही नहीं और यदि *लक्ष* बैठ जाए तो काम हुए बगैर रहता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या ऐसे-ऐसे अंतराय कर्म होते हैं, जो हमें ज्ञान में या जागृति में पीछे धकेल देते हैं?

दादाश्री : जो मानो वह, अंतराय कर्म या अपने पुरुषार्थ की कमी। यह पुरुषार्थ तो मैंने आपके लिए खोल दिया है। जब से शुद्धात्मा बनाया है तभी से पुरुषार्थ खुल गया है। अत: आपके पुरुषार्थ की ही कमी है।

पुरुषार्थ आपको तय करना चाहिए। निश्चय करोगे तो वह अपने आप ही हो जाएगा। निश्चय करना चाहिए। आपने निश्चय नहीं किया है कि अभेदभाव से रहना है। अभी भी निश्चय कच्चा है इसलिए ज़रा कच्चा ही होता रहता है। यदि निश्चय पक्का कर लोगे तो अच्छी तरह से होता रहेगा। निश्चय ही पुरुषार्थ है!

प्रश्नकर्ता : मैं ऐसा कह रहा था कि पहले निश्चय हो जाना चाहिए कि मुझे आज्ञा पालन करना है।

दादाश्री : तो फिर पूरा पालन किया जा सकेगा। निश्चय उसे कहेंगे कि हम ने जो तय किया, वह अंत तक रहे। इसलिए फिर आगे जाकर उसका अनुसंधान मिल जाए। 'टाइमिंग' भी मिल जाए। अगर निश्चय बदल दें तो आगे अनुसंधान नहीं मिल सकता है। अगर एक निश्चय करने के बाद फिर दूसरा निश्चय करें तो वह मिलता ज़रूर है मगर उसके टाइम पर नहीं और वह भी 'पीसीस' में मिलता है, एक साथ नहीं मिल पाता।

जब संपूर्ण रूप से आज्ञा में रहा जाए तब 'पोतापणुं' का नाश होता है। आज्ञा में रहें तो स्वच्छंद रहा ही नहीं न! फिर जैसी जिसकी समझ, यदि अबुध बनकर काम *निकाल* ले, तो। यदि 'हमारी' एक ही आज्ञा का संपूर्ण रूप से पालन करे न, तो एकावतारी हुआ जा सकता है!

आत्मा प्राप्त होने के बाद में पुरुषार्थ और पराक्रम उत्पन्न होते हैं। यदि पराक्रम नहीं हो पाता है तो पुरुषार्थ करो। पराक्रम अर्थात् जैसे कि यह कुत्ता है न, वह पूरे दिन की जो धूल उड़ी होती है न, तो वह एक ही बार ऐसे-ऐसे करके झाड़ देता है, तो सारी धूल उड़ जाती है, साफ हो जाता है। उसे पराक्रम कहा जाता है। क्या तूने ऐसा नहीं देखा है? कुत्ता क्या करता है?

प्रश्नकर्ता : इस तरह वह अपना पूरा शरीर साफ कर देता है।

दादाश्री : ऐसा कौन से प्रोफेसर ने सिखाया होगा? क्या प्रोफेसर के सिखाए बिना आ जाता है? लेकिन देखो न, कैसे साफ हो जाते हैं! ज़रा सा भी दाग़ नहीं रहता है उन पर! आप पुरुष बने यानी पुरुष की शक्ति पुरुषार्थ सहित होनी चाहिए, स्व-पराक्रम सहित होनी चाहिए। ओहोहो! हम स्व-पराक्रम से पूरी दुनिया में घूमते हैं, एक ही घंटे में! मैंने आपको पुरुष बनाया उसके बाद से, आपके शुद्धात्मा होने के बाद से, आपकी शक्तियाँ बहुत ही बढ़ने लगती हैं। लेकिन यदि इसका *लक्ष* रखोगे और हमारे टच में रहोगे तो बहुत हेल्प होगी और टच में रहोगे तो यह रोग निकालने की शक्ति भी उत्पन्न होगी न! खुद की शक्ति से *अटकण* (जो आगे नहीं बढ़ने दे) निकालनी और पराक्रम करना, वह कुछ आसान नहीं है। 'यहाँ से' शक्ति लेकर करोगे, तभी पराक्रम होगा।

(सूत्र-29)

यह सारा संसार गोल-गोल है। इसका अंत आए, ऐसा है ही नहीं। अतः बात का अंत खोजने के लिए 'ज्ञानी पुरुष' से पूछना कि, 'अब हमें कब तक भटकना है? हम तो कोल्हू के बैल की तरह चक्कर लगाते रहते हैं! ''ज्ञानी पुरुष' से कहना कि, 'मेरा हल ला दीजिए।'' 'ज्ञानी पुरुष के पास पड़े रहना है', ऐसी भावना से पराक्रम उत्पन्न होता है।

जगत् का दर्शन अनंत मोहनीय वाला है, और उसमें से कोई भाग नहीं सकता। छूटने की इच्छा तो है, लेकिन मार्ग नहीं मिल पाता। मार्ग मिलना अति-अति दुर्लभ है। यह 'ज्ञानी पुरुष' का संयोग मिलना ही मुश्किल है। सभी संयोग इकट्ठे होकर बिखर जाने वाले हैं, लेकिन ज्ञानी पुरुष के संयोग से 'सदा की ठंडक' प्राप्त होती है। अब तो काम *निकाल* लेना है। 'ज्ञानी पुरुष के पास पड़े रहना है', ऐसी भावना से पराक्रम उत्पन्न होता है। उसके बाद चाहे कैसे भी संयोग आएँ, फिर भी पराक्रम से पार उतरा जा सकता है।

इसलिए हम कहते हैं कि सब तरफ से आप छूट जाओ। अब ' पुरुष' हुए हो आप, इसलिए पराक्रम कर सकोगे। नहीं तो मनुष्य पूर्णरूप से प्रकृति के अधीन है, लट्टू स्वरूप है! उस लट्टू की दशा में से मुक्त होकर पराक्रमी हुए हो, स्व-पुरुषार्थ और स्व-पराक्रम सहित हो! और 'ज्ञानी पुरुष' की छत्रछाया आप पर है। फिर आपको क्या डर है?

'इस' सत्संग में आपकी बुद्धि के सभी दरवाज़े बंद हो जाते हैं। धीरे-धीरे सभी खुलासे होते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' जैसे हैं आपको भी वैसा ही बना देते हैं! 'ज्ञानी' के चरणों में पड़े रहने के सिवा छुटकारा नहीं है। 'ज्ञानी पुरुष' यानी क्या? आईना। आपमें जैसा हो वैसा दिखाई देता है। सिर्फ 'ज्ञानी पुरुष' ही संसार का अंतिम सार हैं।

पुस्तक में यदि 'कैन्डल' (मोमबती) चित्रित हो तो क्या उससे उजाला होता है? कागज़ पर चित्रित किए हुए से कुछ नहीं मिलता। आत्मा तो 'ज्ञानी पुरुष' से ही जानने जैसा है! तुझे आत्मा जानना है तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास जा। सत् तो निरालंब वस्तु है। वहाँ पर यदि 'अवलंबन' लेकर खोजने जाएगा तो कैसे प्राप्त होगा? वह तो, सिर्फ 'ज्ञानी पुरष' का अवलंबन लेने से ही काम होगा। क्योंकि वह सब से अंतिम साधन है! आत्मा निरालंब है! सिर्फ आत्मा को जानना है, समझना है और उसमें स्थिर होना है। 'शक्कर मीठी है' ऐसा सभी कहते हैं। जबकि 'ज्ञानी पुरुष' मीठी यानी कैसी, ऐसा चखा देते है!

करोडों जन्मों में भी मुक्ति का ठिकाना पड़े, ऐसा नहीं है। यह तो, प्रत्यक्ष 'ज्ञानी पुरुष' मिल गए हैं इसलिए काम होता है। मोक्षमार्ग शुरू हुआ, ऐसा कब कहलाएगा? जो मोक्षस्वरूप हो चुके हैं, ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' के पीछे चलने लगें, तब मोक्ष मार्ग शुरू हो गया। इनके पीछे चलना है ऐसा तय कर लिया, कि देर-सवेर अब इनके पीछे-पीछे ही चलना है तब मोक्षमार्ग शुरू हो गया। उसकी मुक्ति अवश्य होगी।

इस बंधन से छूटने के लिए बंधन मुक्त हुए 'ज्ञानी पुरुष' के आश्रय में जाना। आत्मज्ञानी के आश्रयवान का भगवान ने मोक्ष लिखकर दिया है। आश्रय यानी क्या? टु अप्रोच नियर एन्ड नियर (नज़दीक जाते रहना)। आश्रय अर्थात् उसी रूप हो जाना।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उतराखंड

काशीपुर **दिनांक : 25 मार्च** **संपर्क :** 9457635398
स्थल : योग भवन, द्रोण सागर, बाजपुर रोड, काशीपुर, (उधमसिंह नगर).

देहरादून **दिनांक : 28 मार्च** **संपर्क :** 9012279556
स्थल : फ्लेट नं. 1, अंतरीप विहार लेन नं. C 12, स्टेट बेंक ऑफ़ इंडिया के पास, टर्नर रोड़, क्लेमेन टाउन, देहरादून.

उत्तरप्रदेश

झाँसी **दिनांक : 23 मार्च** **संपर्क :** 9415588788
स्थल : पटेल गार्डन, टाटा मोटर्स के सामने, शिवपुरी रोड, झांसी.

आगरा **दिनांक : 26 मार्च** **संपर्क :** 9258744087
स्थल : यूथ हॉस्टल, संजय प्लेस, आगरा.

गोरखपुर **दिनांक : 28 मार्च** **संपर्क :** 9935949099
स्थल : 095A, बजरंग नगर कोलोनी के सामने, रामनगर रोड़, गोरखनाथ, गोरखपुर.

सिद्धार्थनगर **दिनांक : 31 मार्च** **संपर्क :** 6392838433
स्थल : गाँव - हरदासपुर खास, पोस्ट - शिवपति नगर, जिल्ला - सिद्धार्थ नगर.

बदलापुर **दिनांक : 3 अप्रैल** **संपर्क :** 9236518934
स्थल : भलुवाही मंदिर के पास, ढेमा रोड, बदलापुर, जौनपुर.

इलाहाबाद **दिनांक : 4 अप्रैल** **संपर्क :** 9935378914
स्थल : विज्ञान परिषद प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश.

छत्तीसगढ़

भिलाई **दिनांक : 1 अप्रैल** **संपर्क :** 9407982704
रायपुर **दिनांक : 3 अप्रैल** **संपर्क :** 9179025061
बिलासपुर **दिनांक : 5 अप्रैल** **संपर्क :** 9425530470

उड़ीसा

भुवनेश्वर **दिनांक : 6 अप्रैल** **संपर्क :** 7077902158
कटक **दिनांक : 7 अप्रैल** **संपर्क :** 8763090042

मध्यप्रदेश

इन्दौर **दिनांक : 8-9 अप्रैल** **संपर्क :** 9893545351, 9229500845
उज्जैन **दिनांक : 10 अप्रैल** **संपर्क :** 9826487407
अंजड़ **दिनांक : 11 अप्रैल** **संपर्क :** 9617153253
खरगोन **दिनांक : 12 अप्रैल** **संपर्क :** 9425643302
जबलपुर **दिनांक : 13 अप्रैल** **संपर्क :** 9893005078
सागर **दिनांक : 14 अप्रैल** **संपर्क :** 9165818181
बांदरी **दिनांक : 14 अप्रैल** **संपर्क :** 9755282170
भोपाल **दिनांक : 15-16 अप्रैल** **संपर्क :** 9826926444

समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आसाम - बिहार

तिनसुकिया	दिनांक : 30 मार्च	संपर्क : 9954591264
लेडो	दिनांक : 31 मार्च	संपर्क : 9954591264, 8638802416
गुवाहाटी	दिनांक : 1-2 अप्रैल	संपर्क : 8011249648, 9085405087
बक्सा	दिनांक : 3 अप्रैल	संपर्क : 8011249648, 9085405087
नलबाड़ी	दिनांक : 5 अप्रैल	संपर्क : 9085405087, 8011249648
पटना	दिनांक : 8-9 अप्रैल	संपर्क : 9431015601

पश्चिम बंगाल

एठेल्बरी	दिनांक : 6 अप्रैल	संपर्क : 9382899417
कोलकाता	दिनांक : 9 अप्रैल	संपर्क : 9831852764, 9830080820
मालदा टाउन	दिनांक : 10 अप्रैल	संपर्क : 7908922840

कर्नाटक

बेंगलुरु	दिनांक : 8-10 अप्रैल	संपर्क : 9342530176
मैसूर	दिनांक : 11 अप्रैल	संपर्क : 9342530176
बेलगाम	दिनांक : 12-13 अप्रैल	संपर्क : 9945894202
हुबली	दिनांक : 14-16 अप्रैल	संपर्क : 9513216111

महाराष्ट्र - तेलंगाना

सोलापुर	दिनांक : 11 अप्रैल	संपर्क : 9284188494
हैदराबाद	दिनांक : 8 अप्रैल	संपर्क : 9885058771

गोवा

फोंडा	दिनांक : 17 अप्रैल	संपर्क : 8698745655

समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2023

sd/-

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation

(Signature of Publisher)

Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2023)

Date	Day	From	to	Event	Venue
29-Mar-23	Wed	7:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	Robert Napier School, Third Avenue, **Kent**, ME7 2LX
30-Mar-23	Thu	7:00 PM	10:00 PM	**GNAN VIDHI**	
01-Apr-23	Sat	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Shree Prajapati Community Centre, 21 Ulverscroft Rd, **Leicester**, LE4 6BY
02-Apr-23	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
02-Apr-23	Sun	4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
03-Apr-23	Mon	3:30 PM	7:00 PM	SATSANG	
14-Apr-23	Fri	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, **Harrow**, HA3 5BD
15-Apr-23	Sat	8:30 AM	12:30 PM	Simandhar Swami small idols Pratishtha	
15-Apr-23	Sat	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
16-Apr-23	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
16-Apr-23	Sun	4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
17-Apr-23	Mon	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
21-24 Apr-23		All day		Akram Vignan Event	**Willingen, Germany**

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर - वर्ष 2023

3 से 7 मई - सत्संग शिविर

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप और सत्संग सेन्टर्स के द्वारा दी जाएगी।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2023

24 से 28 मई - सत्संग और 25 मई - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी अप्रैल 2023 के अंक में दी जाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु इस शिविर में आना चाहते हैं, वे ट्रेन रिज़र्वेशन अवश्य करवा लें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पालीताणा : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 9 से 12 फरवरी 2023

सत्संग

108 फुट के
आदिनाथ भगवान के पास भक्ति

समवसरण देरासर

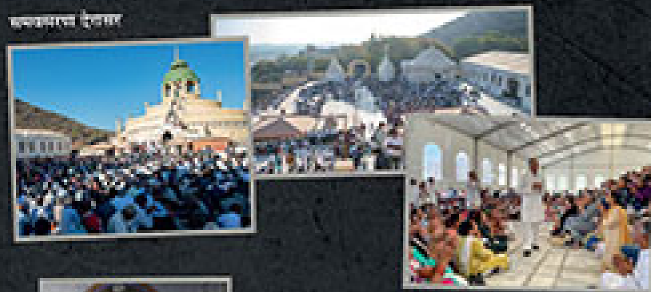

रोहिशाला

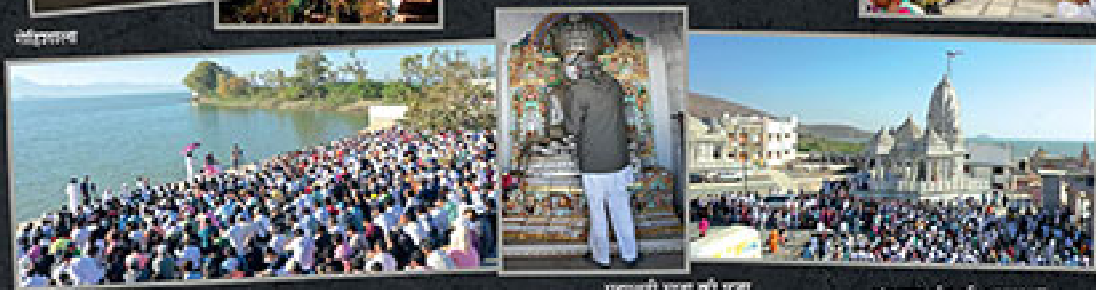

पहाड़ यात्रा

पद्मावती माता की पूजा

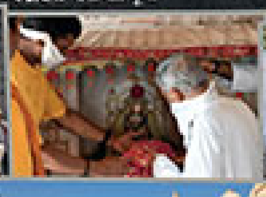

अंगारशा पीर की दरगाह पर

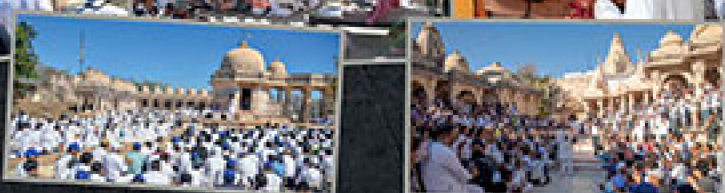

नौ टूंक पर
भक्ति

इन्फोर्मल सत्संग और भक्ति

ज्ञानविधि

मार्च 2023
वर्ष-18 अंक-5
अखंड क्रमांक - 209

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

जिसे छूटना है, उसे छुड़वाने वाले मिल जाते हैं

वह तो जिसे छूटना है उसे भगवान छुड़वाते हैं। जिसे छूटना ही नहीं है उसे कैसे छुड़वाएँगे? क्योंकि भगवान के घर पर भी नियम है। भगवान का नियम क्या है? जिसे छूटना है उसे भगवान कभी भी बाँधते नहीं हैं और जिसे बंधना है उसे कभी भी छोड़ते नहीं हैं। अब, जगत् में लोगों से पूछने जाए कि आपको बंधना है या छूटना है? वे बंधने के कारणों का सेवन करते हैं या छूटने के कारणों का सेवन करते हैं, उस पर से समझ में आएगा। छूटने के कारणों का सेवन करे, उसे छूटने के संयोग मिल जाते हैं। वहाँ उसे भगवान 'हेल्प' ही करते रहते हैं और जो बंधने के कारणों का सेवन करे, उसे भी भगवान हेल्प करते रहते हैं। भगवान का तो 'हेल्प' करने का ही काम है न!

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.